

प्रधानमंत्री कार्यालय

कर्नाटक में पांच डीआरडीओ (DRDO) यंग साइंटिस्ट लैब्स के उद्घाटन अवसर पर प्रधानमंत्री के सम्बोधन का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 02 JAN 2020 10:10PM by PIB Delhi

कर्नाटका के मुख्यमंत्री श्रीमान येदियुरप्पा जी, DRDO के चेयरमैन डॉ जी. सतीश रेड्डी जी, DRDO के अन्य शीर्ष अधिकारीगण, Apex Committees के Members! Young scientists के labs directors

साथियो, आप सभी को सबसे पहले नववर्ष की बहुत-बहुत शुभकामनाएं। Happy New Year... ये संयोग ही है कि अब से कुछ समय पहले मैं किसानों के कार्यक्रम में था तुमकुर और अब यहां देश के जवान और अनुसंधान की चिंता करने वाले आप सभी साथियों के बीच में हूं। और कल मुझे साइंस कांग्रेस में जाना है। एक प्रकार से कर्नाटका का मेरा ये प्रवास और 2020 का ये मेरा पहला प्रवास, जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान और जय अनुसंधान इसकी न्यू इंडिया की भावना को एक प्रकार से समर्पित है। और ये भी हम सबके लिए बहुत गौरव का विषय है कि ये आयोजन Aeronautical Development Establishment में हो रहा है, जहां हम सभी के श्रद्धेय डॉ. ए पी जे अब्दुल कलाम DRDO से जुड़े थे।

साथियो, ये दशक न्यू इंडिया के रूप में तो महत्वपूर्ण है ही है। क्योंकि जब 2020 है तो वो एक नया साल नहीं पूरा दशक हमारे सामने आया है। और आने वाले वर्षों में भारत की ताकत क्या होगी, विश्व में हमारा स्थान कहां होगा। ये decade ये भी तय करने वाला है। ये वो दशक है जो पूरी तरह से युवा सपनों का है, हमारे युवा Innovators का है। विशेष तौर पर वो Innovators जो 21वीं सदी में या तो पैदा हुए हैं या फिर 21वीं सदी में युवा हुए हैं। जब मैंने आपसे आग्रह किया था कि DRDO को rethink और खुद को reshape करना चाहिए। 21वीं सदी की चुनौतियों से निपटने के लिए नई ऊर्जा के साथ काम करना चाहिए। तो इसके पीछे यही मेरी एक सोच थी कि इसका मतलब ये नहीं कि जो 36 का हो गया वो बेकार हो गया... इसके पीछे मेरी भूमिका यही है कि जो 60 साल, 50 साल, 55 साल इतनी तपस्या करके वहां पहुंचे हैं अगर उनके कंधे पर वो 35 से कम आयु वाले को बिठा देते हैं तो दुनिया को एक नए भारत के दर्शन होते हैं। ये जो पुराने लोग हैं उनकी मजबूती के बिना नए का ऊपर जाना संभव नहीं है। और इसलिए ये एक Combination बहुत आवश्यक है। और इस विचार के पीछे मेरा अपना भी एक अनुभव है। मैं राजनीतिक जीवन में बहुत देर से आया हूं और शुरू में मैं मेरा पार्टी का organization का काम देखता था। election or moment उन चीजों को करता था। तो मैं जब गुजरात में मैंने शुरुआत की और मेरे सामने पहला एक बड़ा चुनाव की जिम्मेवारी आई। मैं बिल्कुल नया था, और उस समय अखबारों ने इस चीज को बड़े विस्तार से लिखा था। क्योंकि उस समय करीब 90 लोग मेरे ऑफिस में, मेरी मैनेजमेंट में काम करते थे। पूरा चुनाव पूरे राज्य भर में लड़ा जाता था लेकिन ऑफिस मैनेजमेंट करीब 90 लोग थे। और Volunteer के रूप में आए थे वो 2-3 महीने के लिए काम करने वाले थे। लेकिन अखबार वालों ने ढूंढ कर निकाला था। ये जो 90 लोग हैं इस पूरी टीम की average age 23 है यानी 23 की average age ग्रुप से मैं चुनाव लड़ा था, और लड़ाया था और हम पहली बार विजयी हुए थे।

युवा में restricting capacity बहुत होती है। आप कितने ही अच्छे कबड्डी के खिलाड़ी हो, कितने ही बढ़िया लेकिन और जीवन में मानो 20 साल तक कबड्डी खेले हैं। National, International खेले हैं लेकिन 60-70 साल की आयु के बाद एक कबड्डी का खेल चल रहा है और आप वहां सिर्फ देखने के लिए गए हैं। क्योंकि पूरी जिंदगी कबड्डी खेलें हैं और कोई 18-20 साल का नौजवान जिस तेजी से मूवमेंट करता है, उठता है, पटकता है, तो आप बाहर बैठे मन में अरे-अरे गिर जाएगा, अरे-अरे चोट न लग जाए.... आप खुद भी तो कभी ये करके आए हैं। लेकिन अब वो देख नहीं पाते लगता है अरे-अरे कहीं गिर न जाए। ये साइकोलॉजी काम करती होगी। ये युवा मन और अनुभवी मन के बीच में एक अंतर होता है। और इसलिए एक मनोवैज्ञानिक परिवर्तन विश्व की चुनौतियों को स्वीकार करने के लिए DRDO में इन दोनों का combination कैसे हो। कभी-कभार एक बहुत बड़े वृक्ष के नीचे छोटा पौधा पनप नहीं पाता है। दोष बड़े वृक्ष का नहीं है। पौधे को भी रहता है कि इनके सामने मुझे ऐसा ही रहना चाहिए। किसी का दोष नहीं है। लेकिन अगर उसी पौधे को कहीं खुले में छोड़ दिया जाए तो देखते ही देखते वट वृक्ष भी गर्व करेगा वाह ये भी मेरे साथ पनप रहा है। इसी एक भूमिका को लेकर के इन पांच Labs से शुरू किया है। और मैं चाहता हूं कि वो गलतियां करे ये पांच Labs पूरा बजट उड़ा दे तो उड़ा दे एक बार। एक scientist पूरी अपनी जिंदगी तबाह कर देता है जी, तब देश को कुछ मिलता है। तो फिर खजाना क्या चीज होती है, आप तो अपनी जिंदगी लगा रहे हो तो सरकार को खजाना लगाने में क्या जाता है।

और मुझे संतोष है कि Advanced Technologies के क्षेत्र में 5 Labs स्थापित करने के सुझाव पर गंभीरता से काम हुआ और आज बेंगलुरु, कोलकाता, चेन्नई, हैदराबाद और मुंबई में 5 ऐसे संस्थान शुरू हो रहे हैं। और मुझे ये विश्वास है कि ये Young Scientist Labs युवा और वैज्ञानिकों के विचार और व्यवहार को नई उड़ान देगी। इसका मतलब ये हुआ कि अब ये पहचाना जाएगा कि DRDO-Y लेकिन बोलते समय लगेगा DRDO Why और मैं समझता हूं कि ये पांच लैब DRDO-Y को जवाब देने की ताकत रखते हैं ये मेरा विश्वास है। और हमने सबने मिल करके इसे बल देना है। इन Labs से मिलने वाले results Advanced Technologies के लिए हमारे राष्ट्रीय प्रयास का स्वरूप intensity का तय करेंगे। ये Labs, देश में उभरती हुई Technologies के क्षेत्र में, Research और Development के स्वरूप को तैयार करने में मदद करेंगी।

और हां, अपने युवा वैज्ञानिक और मैं इन साथियों से जरूर कहना चाहूंगा कि ये Labs, सिर्फ टेक्नोलॉजी को टेस्ट नहीं करेंगी, वर्ना कभी-कभी तो लगता है ये टेक्नोलॉजी में 2 कदम गए 5 कदम गए मेरे हिसाब से ये सिर्फ टेक्नोलॉजी को टेस्ट नहीं करेंगी। ये मेरे young scientist के टैंपरमेंट और पेशेंस को भी टेस्ट करने वाली हैं और यही सबसे बड़ा उसका पैरामीटर है।

आपको हमेशा ये ध्यान रखना होगा कि आपके प्रयास और निरंतर अभ्यास से ही भारत सफलता के रास्ते पर आगे ले जाएगा। सिर्फ Positivity or Purpose यही आपकी प्रेरणा के स्रोत होने चाहिए। आपको हमेशा ये ध्यान रखना है। कि 130 करोड़ की आबादी का जीवन सुरक्षित और आसान बनाने का जिम्मा आपके कंधे पर है।

साथियो आज का ये कार्यक्रम तो एक शुरुआत भर है। आपके सामने सिर्फ अगला एक साल नहीं, अगला एक दशक है। इस एक दशक में DRDO का मीडियम और लॉन्ग टर्म रोडमैप क्या हो, इस पर बहुत गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए। और मैं एक और सुझाव देता हूं। ये पांच लैब्स 35 और उसके नीचे की टीम है और जब इस टीम में 36 हो जाएंगे तो क्या होगा तो मैं उन लोगों को insurance देता हूं कि अब इस 5 लैब को 45 होने की भी छूट है और 55 होने की भी छूट है। आपको नई पांच 35 वाली बनानी होगी इसको 35 maintain नहीं करना है ये 35 वाला 40 होने दीजिए, ये 35 वाले को 45 होने दीजिए। अब नए पांच 35 वाले करिए। वे जब 35 cross करेंगे तो फिर नए 35 वाले पांच कीजिए ये चेन चलती रहनी चाहिए। अगर ये चेन नहीं चलेगी तो यहां 32 वाला बैठा है वो सोचेगा कि मेरे लिए

यहां 3 साल है मैं क्या करूं फिर तो मेरा सारा सपना टूट जाएगा। इसलिए जिनको ये दिया है लैब तो जब तक वो न थक जाए तब तक उसके जिम्मे छोड़ दीजिए। वे पचास का हो जाए, पचपन का हो जाए साठ का हो जाए करने दीजिए। 5 नई लैब 35 वाली बना दीजिए। और ये पांच का क्रम चलता रहे। तब देखिए आप नयापन का एक क्षेत्र लगातार बनता चला जाएगा। और यही हमें ultimately फायदा करेगा। और सिर्फ हम विचार करने पर न रुके। तय समय के भीतर actionable point पर भी कार्यक्रम भी शुरू होना चाहिए।

मैं DRDO को उस ऊँचाई पर देखना चाहता हूँ जहाँ वो न सिर्फ भारत के वैज्ञानिक संस्थानों की दिशा और दशा तय करे, बल्कि दुनिया के.... और मैं बहुत जिम्मेवारी के साथ कह रहा हूँ। दुनिया के.... और अन्य बड़े संस्थानों के लिए भी DRDO और हमारी young lab प्रेरणास्रोत बन सकती है। मैं ऐसा क्यों कह रहा हूँ इसकी ठोस वजह है..... वजह है DRDO का इतिहास, DRDO का प्रदर्शन, DRDO देश का भरोसा।

साथियो आज देश का बेहतरीन Scientific Mind DRDO में है। DRDO की उपलब्धिया अनंत है। अभी मैंने जो exhibition देखी है। जिसमें मौजूदा उपलब्धियों के साथ-साथ भविष्य के आपके प्लान और प्रोजेक्ट की भी जानकारी है। और मुझे इतनी सरल भाषा में आपके नौजवानों ने समझाया कि मुझे भी समझ आ गया कि हां ये तो मैं भी कर सकता हूँ। वर्ना स्कूल तो नहीं समझ में आता था कुछ। आज आपने समझा दिया। आपने भारत के मिसाइल कार्यक्रम को दुनिया के सबसे उत्कृष्ट कार्यक्रमों में शामिल किया है। और बीता वर्ष तो स्पेस और एयर डिफेंस के क्षेत्र में भारत के सामर्थ्य को नई दिशा देने वाला रहा है। A set... A set के रूप में अत्याधुनिक स्पेज टेक्नोलॉजी का सफल परीक्षण ये निश्चित रूप से 21वीं सदी के भारत के capability को define करेगा।

आप सभी के प्रयासों से आज भारत उन बहुत कम देशों में से एक है जिनके पास aircrafts से लेकर के aircraft carrier तक सब कुछ बनाने की क्षमता है। लेकिन क्या सिर्फ इतना किया जाना काफी है। जी नहीं... साथियो और..... घर में भी देखा होगा जो बच्चा अच्छा काम करता है मां-बाप उसको ज्यादा परेशान करते हैं वो पांच करता है तो बोलते हैं सात करो। सात करता है तो बोलते हैं दस करो..... और जो नहीं करता है अरे छोड़ो..... वो करेगा नहीं वो..... उसे छोड़ देते हैं। तो आपकी मुसीबत है कि आपको लोग काम बताते ही रहेंगे।

देखिए रामचरित्र मानस में एक बहुत बढ़िया बात कही है। रामचरित्र मानस में कहा गया है

कवन जो काम कठिन जग माहीं।

जो नहिं होइ तात तुम्ह पाहीं।।

यानी इस धरती पर ऐसा कौन सा कार्य है आपसे हो नहीं सकता। तो सब कुछ हो सकता है आपके लिए कोई भी कार्य कठिन नहीं है। जैसे जब रामचरित्र मानस जब बना तब उसे मालूम था कभी DRDO होगा। मैं DRDO के लिए भी यही दोहराना चाहता हूँ। आपकी क्षमताएं असीम हैं आप बहुत कुछ कर सकते हैं। आपने दायरे का विस्तार करिए अपने Performance के Parameters को बदलिए, अपने पंख को पूरी क्षमता से खोलकर आसमान पर एकछत्र राज करने का हौसला तो दिखाइए। अवसर है और मैं आपके साथ हूँ।

देश के प्रधानमंत्री के नाते मैं आपके सामने खड़ा होकर कह रहा हूँ कि सरकार पूरी तरह आपके साथ, देश के वैज्ञानिकों के साथ, innovators के साथ कंधे से कंधे मिलाकर चलने के लिए आज हिंदुस्तान तैयार है। आप सभी इस बात से परिचित हैं कि आने वाले समय में Air और Sea के साथ-साथ Cyber और Space भी दुनिया के Strategic Dynamics को तय करने वाला है। इसके साथ-

साथ Intelligent Machines भविष्य की रक्षा सुरक्षा के तंत्र में अहम भूमिका निभाने लायक है। ऐसे में भारत किसी से भी पीछे नहीं रह सकता। अपने नागरिकों, अपनी सीमाओं और अपने हितों की रक्षा के लिए भविष्य की तकनीक पर Investment भी ज़रूरी है और Innovation भी आवश्यक है।

मुझे विश्वास है कि न्यू इंडिया की आवश्यकताओं और आंकाक्षाओं को पूरा करने में आप कोई कसर बाकी नहीं छोड़ेंगे, और बल्कि मैं तो ये भी कहूंगा कि आपका विस्तार सिर्फ भारत के भीतर तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए। DRDO जैसा संस्थान दुनिया में मानवता को बहुत कुछ दे सकता है। विश्व सुरक्षा में आप बड़ी भूमिका निभा सकते हैं। आज दुनिया के बहुत से देश हैं जिन्हें सीमाओं पर हमले का खतरा नहीं है। अड़ोस-पड़ोस में सारे मित्र देश हैं। लेकिन ये देश भी जिन्होंने कभी नहीं सोचा था कि उनको बंदूक तो उठानी पड़ेगी। क्योंकि अड़ोस-पड़ोस कभी युद्ध का खतरा ही नहीं था। सीमाएं सुरक्षित थी, शांत थी, खुली थी, प्यार भरा माहौल था लेकिन वे देश भी आतंकवाद की चपेट में आ चुके हैं। उनको भी बंदूक उठानी पड़ी।

DRDO ऐसे देशों में भी आंतरिक सुरक्षा बढ़ाने में अपना योगदान दे सकता है। जिन छोटे-छोटे देश के लोगों से मैं मिलता हूं उनकी इतनी आवश्यकताएं बढ़ गई हैं। सीमित संसाधनों के बाद भी इन खतरों के लिए उनको कुछ-कुछ नया सोचना पड़ेगा। हम ऐसे छोटे-छोटे लोगों का हाथ पकड़ करके उनको सुरक्षा की गारंटी दे सकते हैं। ये मानवता का काम होगा। और आपके द्वारा किया गया ऐसा हर कार्य मानवता की बहुत बड़ी सेवा होगा और विश्व मंच पर भारत की भूमिका को भी और मजबूत करेगा।

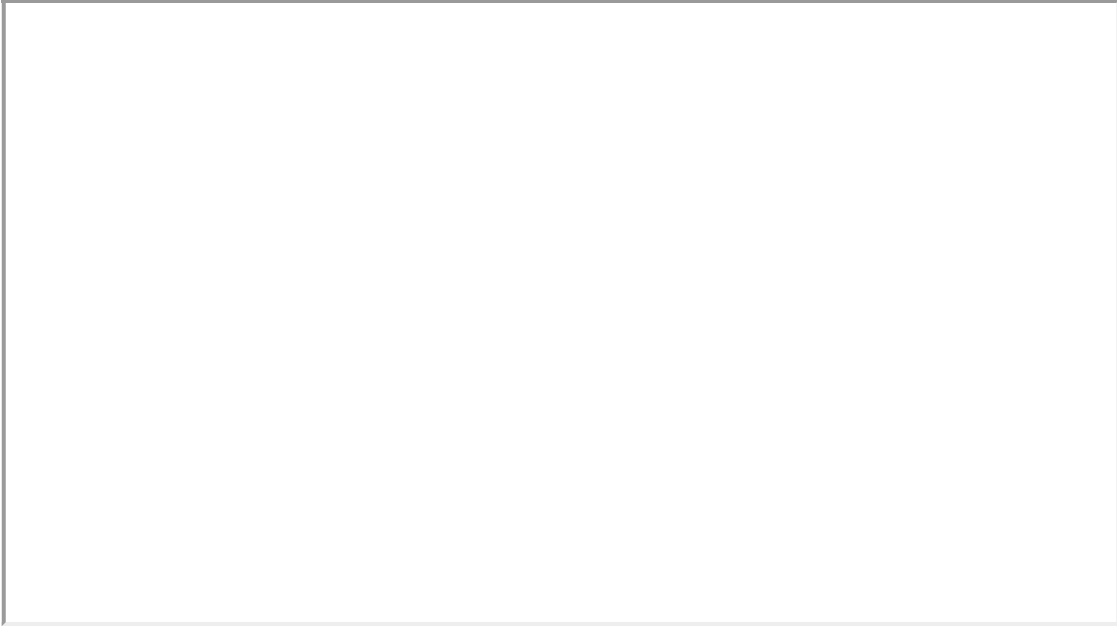
साथियों, Defence Manufacturing के क्षेत्र में, भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए DRDO को नए Innovations के साथ सामने आना होगा। देश में एक Vibrant Defense Sector को बढ़ावा देने में, मेक इन इंडिया को मजबूत करने में DRDO के Innovations की बहुत बड़ी भूमिका है। और इसलिए हमारा ये निरंतर प्रयास होना चाहिए कि design से लेकर development तक हम पूरी तरह से आत्मनिर्भर बनें। हमें ऐसा Ecosystem विकसित करना होगा जहां integration और innovation पर संपूर्ण ध्यान हो।

साथियों, आज भारत डिफेंस के क्षेत्र में नए-नए रिफॉर्म्स की तरफ तेजी से आगे बढ़ रहा है। दुनिया में जितनी तेजी से स्थितियां बदल रही हैं। टेक्नोलॉजी निरंतर हावी हो रही है। भारत सिर्फ पुरानी व्यवस्थाओं के भरोसे नहीं रह सकता। मैं 19वीं सदी की व्यवस्थाओं से 21वीं सदी पार नहीं कर सकता अभी इसी हफ्ते अभी इसी हफ्ते, सरकार द्वारा चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ की भी नियुक्ति की गई है। ये सीडीएस अपने आप में बहुत बड़ा बदलाव लाने वाला है। उसका सीधा संबंध DRDO से जाने वाला है। बरसों पहले इस बात की जरूरत महसूस की गई थी कि भारत में तीनों सेनाओं के बीच बेहतर तालमेल के लिए, ज्वाइंटनेस और सिनर्जी के लिए इस तरह का पद होना चाहिए, व्यवस्था होनी चाहिए। ये पद, हमारी सरकार का देश के प्रति कमिटमेंट था, जिसे हमने पूरा किया है।

साथियों, हमें परिवर्तन के इस दौर के साथ खुद को निरंतर मजबूत करते रहना है। यही देश की हमसे अपेक्षा है और Young Scientists Labs की स्थापना के पीछे भी यही विजन है। आज भविष्य के Technological Challenges से तो निपटेंगे ही, DRDO के वर्किंग कल्चर में भी नई ऊर्जा का संचार करेंगे, इसी कामना के साथ, आप सभी को एक बार फिर मेरी तरफ से बहुत-बहुत बधाई।

आपको और आपके परिवार को फिर एक बार नए वर्ष की मंगलकामना।

बहुत-बहुत धन्यवाद।



वी.रवि रामाकृष्णा/कंचन पतियाल/बाल्मीकि महतो/ममता साहनी

(रिलीज़ आईडी: 1598497) आगंतुक पटल : 239

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English , Marathi , Bengali , Punjabi , Gujarati , Tamil

प्रधानमंत्री कार्यालय

राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) रैली में प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 28 JAN 2020 5:09PM by PIB Delhi

कैबिनेट में मेरे सहयोगी श्री राजनाथ सिंह जी, श्रीपद येशो नाइक जी, चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल बिपिन रावत जी, तीनों सेनाओं के उच्च पदाधिकारीगण, रक्षा सचिव, नेशनल कैडेट कॉर्प्स के डायरेक्टर जनरल, मित्र देशों से आए हमारे मेहमान और देश के कोने-कोने यहां उपस्थित NCC के मेरे युवा साथियों,

सबसे पहले तो मैं आप सभी को, यहां हुए कार्यक्रम के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूं।

गणतंत्र दिवस की परेड में और आज की इस बेहतरीन परफॉर्मेंस के साथ ही, आपने देश के लिए जो काम किए, चाहे वो सोशल सर्विस हो या फिर स्पोर्ट्स, आपने जो उपलब्धियां हासिल की हैं, वो भी प्रशंसनीय हैं।

आज यहां जिन साथियों को पुरस्कार मिले हैं, उनको मैं बहुत-बहुत बधाई देता हूं, शुभकामनाएं देता हूं। यूथ एक्सचेंज प्रोग्राम के तहत हमारे पड़ोसी देशों, हमारे मित्र देशों के भी अनेक कैडेट्स यहां मौजूद हैं। मैं उनका भी अभिवादन करता हूं।

साथियों,

NCC, देश की युवाशक्ति में Discipline, Determination और देश के प्रति Devotion की भावना को मजबूत करने का बहुत सशक्त मंच है। ये भावनाएं देश के Development के साथ सीधी-सीधी जुड़ी हैं।

जिस देश के युवा में अनुशासन हो, दृढ़ इच्छाशक्ति हो, निष्ठा हो, लगन हो, उस देश का तेज गति से विकास कोई नहीं रोक सकता।

साथियों,

आज विश्व में हमारे देश की पहचान, युवा देश के रूप में है। देश के 65 परसेंट से ज्यादा लोग 35 वर्ष से कम उम्र के हैं।

देश युवा है, इसका हमें गर्व है लेकिन देश की सोच युवा हो, ये हमारा दायित्व होना चाहिए।

और युवा सोच का मतलब क्या होता है?

जो थके-हारे लोग होते हैं वे न सोचने का समर्थ्य रखते हैं और न ही देश के लिए कुछ करने का इरादा रखते हैं। वो किस तरह की बातें करते हैं, ध्यान दिया है आपने?

चलो भई, जैसा है, एडजस्ट कर लो!!!

चलो अभी किसी तरह समय निकाल लो !!!

चलो आगे देखा जाएगा !!!

इतनी जल्दी क्या है, टाल दो ना, कल देखेंगे!!!

साथियों,

जो लोग इस प्रवृत्ति के होते हैं, उनके लिए कल कभी नहीं आता।

ऐसे लोगों को दिखता है सिर्फ स्वार्थ। अपना स्वार्थ।

आपको ज्यादातर जगह ऐसी सोच वाले लोग मिल जाएंगे।

इस स्थिति को मेरे आज का युवा भारत, मेरे भारत का युवा, स्वीकारने के लिए तैयार नहीं है। वो छटपटा रहा है कि स्वतंत्रता के इतने साल हो गए, चीजें कब तक ऐसे ही चलती रहेंगी? कब तक हम पुरानी कमजोरियां को पकड़कर बैठे रहेंगे?

वो बाहर जाता है, दुनिया देखता है और फिर उसे भारत में दशकों पुरानी समस्याएं नजर आती हैं।

वो इन समस्याओं का शिकार होने के लिए तैयार नहीं है।

वो देश बदलना चाहता है, स्थितियां बदलना चाहता है।

और इसलिए उसने तय किया है कि Boss, अब टाला नहीं जाएगा, अब टकराया जाएगा, निपटा जाएगा।

यही है युवा सोच, यही है युवा मन, यही है युवा भारत।

यही युवा भारत कह रहा है कि देश को अतीत की बीमारियों से मुक्त करना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए,

यही युवा भारत कह रहा है कि देश के वर्तमान को सुधारते हुए, उसकी नींव मजबूत करते हुए तेज गति से विकास होना चाहिए और यही युवा भारत कह रहा है कि देश का हर निर्णय, आने वाली पीढ़ियों को उज्ज्वल भविष्य की गारंटी देने वाला होना चाहिए।

अतीत की चुनौतियों, वर्तमान की जरूरतों और भविष्य की आकांक्षाओं को ध्यान में रखते हुए तीनों ही स्तरों पर हमें एक साथ काम करना होगा।

साथियों,

आप NCC से जुड़ने के बाद इतनी मेहनत करते हैं, जब बुलाया तब आते हैं, पढ़ाई के साथ-साथ घंटों तक ड्रिल-प्रैक्टिस, सब एक साथ चलता रहता है। आपके भीतर ये जज्बा है कि पढ़ेंगे भी और देश के लिए कुछ करेंगे भी।

और बाहर क्या स्थिति मिलती रही है?

कभी यहां आतंकवादी हमला हुआ, इतने निर्दोष लोग मारे गए। कभी वहां नक्सली-माओवादियों ने बारूदी सुरंग उड़ा दी, इतने जवान मारे गए। कभी अलगाववादियों ने ये भाषण दिया, कभी भारत के खिलाफ जहर उगला, कभी तिरंगे का अपमान किया।

इस स्थिति को स्वीकार करने के लिए हम तैयार नहीं हैं, युवा भारत तैयार नहीं है, न्यू इंडिया तैयार नहीं है।

साथियों,

कभी-कभी कोई बीमारी लंबे समय तक ठीक न हो तो वो शरीर का हिस्सा बन जाती है। हमारे राष्ट्र जीवन में भी ऐसा ही हुआ है। ऐसी अनेक बीमारियों ने देश को इतना कमजोर कर दिया कि उसकी अधिकतर ऊर्जा इनसे लड़ने-निपटने में ही लग जाती है। आखिर ऐसा कब तक चलता? और कितने साल

तक हम इन बीमारियों का बोझ ढोते रहते? और कितने साल तक टालते रहते?

आप सोचिए,

जब से देश आजाद हुआ, तब से कश्मीर में समस्या बनी हुई है। वहां की समस्या के समाधान के लिए क्या किया गया? तीन चार परिवार और तीन-चार दल और सभी का जोर समस्या को समाप्त करने में नहीं बल्कि समस्या को पालने-पोसने, उसे जिंदा रखने में लगा रहा।

नतीजा क्या हुआ? कश्मीर को आतंक ने तबाह कर दिया, आतंकवादियों के हाथों हजारों निर्दोष लोग मारे गए।

आप सोच सकते हैं कहीं पर वही के रहने वालों को, लाखों लोगों को, एक रात में घर छोड़कर हमेशा-हमेशा के लिए निकल जाने को कहा जाए और सरकार कुछ कर नहीं सके।

आतंकियों की हिम्मत बढ़ाने वाले यही सोच थी। सरकार को, प्रशासन को कमजोर करने वाले यही सोच थी।

क्या कश्मीर को ऐसे ही चलने देते, जैसे वो चल रहा था?

साथियों,

जम्मू-कश्मीर में आर्टिकल 370 ये कहकर लागू हुआ था कि ये अस्थाई है। संविधान में भी यही लिखा गया कि ये अस्थाई है। लेकिन दशकों बीत गए, संविधान में जो अस्थाई था, उसे हटाने की हिम्मत किसी ने नहीं दिखाई।

वजह वही थी, सोच वही थी। अपना हित, अपने राजनीतिक दल का हित, अपना वोटबैंक।

क्या हम अपने देश के नौजवानों को ऐसा भारत देते जिसमें कश्मीर में आतंकवाद पनपता रहता, जिसमें निर्दोष लोग मारे जाते रहते, जिसमें तिरंगे का अपमान होता रहता और सरकार तमाशा देखती रहती।

नहीं।

कश्मीर, भारत की मुकुट मणि है। कश्मीर और वहां के लोगों दशकों पुरानी समस्याओं से निकालना, हमारा दायित्व था और हमने ये करके दिखाया है।

साथियों,

हम जानते हैं कि हमारा पड़ोसी देश हमसे तीन-तीन युद्ध हार चुका है। हमारी सेनाओं को उसे धूल चटाने में हफ्ते दस दिन से ज्यादा का समय नहीं लगता। ऐसे में वो दशकों से भारत के खिलाफ छद्म युद्ध- proxy War लड़ रहा है। इस प्रॉक्सी वॉर में भारत के हजारों नागरिक मारे गए हैं।

लेकिन पहले इसे लेकर क्या सोच थी? वो लोग सोचते थे कि ये आतंकवाद, ये आतंकी हमले, बम धमाके ये तो Law and Order Problem हैं !!!

इसी सोच की वजह से बम धमाके होते गए, आतंकी हमलों में लोग मरते गए, भारत मां लहू-लुहान होती गई।

बातें बहुत हुई, भाषण बहुत हुए, लेकिन जब हमारी सेनाएं Action के लिए कहतीं तो उन्हें मना कर दिया जाता, टाल दिया जाता।

आज युवा सोच है, युवा मन के साथ देश आगे बढ़ रहा है इसलिए वो सर्जिकल स्ट्राइक करता है, एयर स्ट्राइक करता है और आतंक के सरपरस्तों को उनके घर में जाकर सबक सिखाता है।

इसका परिणाम क्या हुआ है, वो आप भी देख रहे हैं।

आज सिर्फ जम्मू-कश्मीर में ही नहीं, बल्कि देश के अन्य हिस्सों में भी शांति कायम हुई है, अलगाववाद-आतंकवाद को बहुत सीमित कर दिया गया है।

साथियों,

पहले नॉर्थ ईस्ट के साथ जिस तरह की नीति अपनाई गई, जिस तरह का व्यवहार किया गया, उसे भी आप भली-भांति जानते हैं।

दशकों तक वहां के लोगों की अपेक्षाओं और आकांक्षाओं को नजरअंदाज किया गया।

वहां के लोगों को ही नहीं, वहां की समस्याओं को, वहां की चुनौतियों को अपने ही हाल पर छोड़ दिया गया था।

पाँच-पाँच, छह-छह दशक से वहां के अनेक क्षेत्र उग्रवाद से परेशान थे। अपनी-अपनी मांगों की वजह से नॉर्थ ईस्ट में कई उग्रवादी संगठन पैदा हो गए थे। इन संगठनों का लोकतंत्र में विश्वास नहीं था। वो ये सोचते थे कि हिंसा से ही रास्ता निकलेगा।

इस हिंसा में हजारों निर्दोष लोग, हजारों सुरक्षाकर्मियों की मौत हुई।

क्या नॉर्थ ईस्ट को हम अपने हाल पर ही छोड़ देते? क्या अपने उन भाई-बहनों की परेशानियों से, उनकी दिक्कतों से ऐसे ही मुंह फेर कर बैठ जाते?

ये हमारे संस्कार नहीं हैं, ये हमारी कार्यसंस्कृति नहीं है।

नॉर्थ ईस्ट को लेकर आज अखबारों में एक बड़ी खबर है। आपने मीडिया में भी देखा होगा। बोडो समस्या को लेकर एक बहुत बड़ा और ऐतिहासिक समझौता हुआ है।

मैं आपसे आग्रह करूंगा कि पिछले पाँच-छह दशकों में देश के ऐसे क्षेत्र और विशेषकर असम किस स्थिति से गुजरा है, उसे पढ़िए, उस पर रिसर्च करिए, तो आपको पता चलेगा कि वहां के लोगों ने, नॉर्थ ईस्ट के लोगों ने किस स्थिति का सामना किया है। लेकिन इस स्थिति को भी बदलने के लिए कोई ठोस पहल पहले नहीं की गई।

क्या हम इस स्थिति को ऐसे ही चलने देते?

नहीं। कतई नहीं।

हमने एक तरफ नॉर्थ ईस्ट के विकास के लिए अभूतपूर्व योजनाओं की शुरुआत की और दूसरी तरफ बहुत ही खुले मन और खुले दिल के साथ सभी Stakeholders के साथ बातचीत शुरू की। बोडो समझौता आज इसी का परिणाम है।

कुछ दिन पहले मिजोरम और त्रिपुरा के बीच ब्रू जनजाति को लेकर हुआ समझौता इसी का परिणाम है। इस समझौते के बाद, ब्रू जनजातियों से जुड़ी 23 साल पुरानी समस्या का समाधान हुआ है।

यही तो युवा भारत की सोच है। सबका साथ लेकर, सबका विकास करते हुए, सबका विश्वास हासिल करते हुए देश को हम आगे बढ़ा रहे हैं।

साथियों,

इस देश का कौन सा नागरिक ऐसा होगा जो ये नहीं चाहेगा कि हमारी सेना आधुनिक हो, सामर्थ्यवान हो। कौन नहीं चाहेगा कि उसके पास युद्ध की आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हों।

हर देशप्रेमी यही चाहेगा, हर राष्ट्रभक्त यही चाहेगा।

लेकिन आप कल्पना कर सकते हैं कि 30 साल से ज्यादा समय से हमारे देश की वायु सेना में एक भी Next Generation Fighter Plane नहीं आया था।

पुराने होते हमारे विमान, हादसों का शिकार होते रहे, हमारे फाइटर पायलट्स शहीद होते रहे लेकिन जिन लोगों पर नए विमान खरीदने की जिम्मेदारी थी, उन्हें जैसे कोई चिंता ही नहीं थी।

क्या हम ऐसा ही चलते रहने देते? क्या ऐसे ही वायुसेना को कमजोर होने देते?

नहीं।

तीन दशक से जो काम लटका हुआ था, वो हमने शुरू करवाया। आज मुझे संतोष है कि देश को तीन दशक के इंतजार के बाद, Next Generation Fighter Plane- स्फाएल मिल गया है। बहुत जल्द वो भारत के आसमान में उड़ेगा।

साथियों,

आप तो यूनीफॉर्म में बैठे हैं। आप इस बात से और ज्यादा relate करेंगे कि ये यूनीफॉर्म अपने साथ कितने कर्तव्य लेकर आती है। इसी कर्तव्य की खातिर हमारा जवान, सीमा पर, देश के भीतर, कभी आतंकवादियों से, कभी नक्सलवादियों से मोर्चा लेता है।

सोचिए, उसके पास अगर बुलेटप्रूफ जैकेट नहीं होगी तो क्या होगा?

लेकिन हमारे यहां ऐसी भी सरकारें रही हैं, ऐसे भी लोग रहे हैं जिन्हें जवानों को बुलेटप्रूफ जैकेट देने तक में तकलीफ थी। वर्ष 2009 से हमारे जवान बुलेटप्रूफ जैकेट मांगते रहे, लेकिन तब के हुक्मरानों ने उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया।

क्या मेरा जवान, ऐसे ही आतंकियों की, नक्सलियों की गोलियों का शिकार होता रहता?

उसने देश के लिए मरने की कसम खाई है लेकिन उसकी जान, हमारे जैसों से कहीं ज्यादा कीमती है।

और इसलिए हमारी सरकार ने न सिर्फ जवानों के लिए पर्याप्त बुलेटप्रूफ जैकेट खरीदने का आदेश दिया बल्कि अब तो भारत दूसरे देशों को बुलेटप्रूफ जैकेट के निर्यात की ओर बढ़ रहा है।

साथियों,

आप में से कई कैडेट्स ऐसे होंगे जिनके परिवार में कोई न कोई फौज में होगा। आप किसी से मिलते हैं, तो गर्व से यही कहते हैं कि मेरे पापा या मेरे चाचा या भईया या दीदी आर्मी में हैं।

सेना के जवानों के प्रति हमारे मन में स्वाभाविक गौरव की भावना होती है। वो देश के लिए इतना कुछ करते हैं कि उन्हें देखते ही भीतर से सम्मान की भावना उमड़ पड़ती है। लेकिन वन रैंक वन पेंशन की उनकी 40 साल, फिर से कह रहा हूं, ध्यान से सुनिएगा- वन रैंक वन पेंशन की उनकी 40 साल पुरानी मांग को पहले की सरकारें पूरा नहीं कर पाईं।

ये हमारी ही सरकार है जिसने 40 साल पुरानी इस मांग को पूरा किया, वन रैंक वन पेंशन लागू किया।

साथियों,

सीमा पर हमारे जो जवान होते हैं, वो देश की सीमा की ही नहीं, देश के लोगों की ही नहीं, देश के स्वाभिमान की भी रक्षा करते हैं। किसी भी आजाद देश की पहली पहचान होती है- स्वाभिमान। देश के स्वाभिमान की रक्षा करने वाले हमारे वीर सैनिकों के लिए आजादी के बाद से ही नेशनल वॉर मेमोरियल

की मांग होती रही है। इसी तरह देश की आंतरिक सुरक्षा को बनाए रखने के लिए अपनी जान गंवाने वाले पुलिसकर्मियों के लिए पुलिस मेमोरियल की मांग भी दशकों से की जाती रही।

क्या कोई कल्पना कर सकता है कि इस एक काम के लिए 50-50 साल, 60-60 साल तक का इंतजार करना पड़े।

ये कैसा तरीका था, कैसी सोच थी, किस रास्ते पर देश को ले जा रहे थे वो लोग?

कुछ लोगों द्वारा, भारत के शहीदों को भुला देने का पाप करने की कोशिश की गई।

देश की सेना, सुरक्षाबलों का स्वाभिमान, उनका आत्मगौरव बढ़ाने के बजाय, उनके स्वाभिमान पर चोट की गई।

क्या NCC का यहां बैठा केडेट इस बात से सहमत होगा?

आपकी युवा सोच, आपका युवा मन जो चाहता है, वही हमारी सरकार ने किया। आज दिल्ली में नेशनल वॉर मेमोरियल भी है और नेशनल पुलिस मेमोरियल भी।

साथियों,

आज पूरे विश्व में अलग-अलग स्तर पर सैन्य व्यवस्थाओं में परिवर्तन हो रहा है। हम सभी जानते हैं कि अब हाथी-घोड़ों पर बैठकर लड़ाई नहीं जीती जाती। आधुनिक युद्ध में जल-थल-नभ यानी हमारी आर्मी, हमारी नेवी और एयरफोर्स को कॉर्डिनेटेड तरीके से ही आगे बढ़ना होता है।

वर्षों से देश में इस बात पर चर्चा हो रही थी कि तीनों सेनाओं में सिनर्जी बढ़ाने के लिए, कॉर्डिनेशन बढ़ाने के लिए चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ-CDS की नियुक्ति की जाए।

लेकिन दुर्भाग्य से इस पर चर्चा ही होती रही, फाइल एक टेबल से दूसरी टेबल तक घूमती रही, किसी ने निर्णय नहीं लिया।

सोच वही थी- क्या फायदा, चल ही रहा है न !!!

साथियों,

डिपार्टमेंट ऑफ मिलिट्री अफेयर्स का गठन, CDS के पद का गठन, CDS के पद पर नियुक्ति, ये काम भी हमारी ही सरकार ने किया है।

उसी युवा सोच के साथ जो कहती है कि अब टालो मत, अब फैसला लो।

और ये भी ध्यान रखिए, onePlus one Plus one अगर तीन होता है CDS की नियुक्ति के बाद अब onePlus one Plus one, एक सौ ग्यारह यानि 111 हो जाता है।

साथियों,

आप कल्पना कर सकते हैं कि क्या कोई देश, अपने हक का पानी भी ऐसे ही बह जाने दे। लेकिन भारत में ये भी हो रहा था। भारत का किसान पानी की कमी से परेशान था और देश का पानी बहकर पाकिस्तान जा रहा था। किसी ने इस पानी को भारत के किसान तक पहुंचाने की हिम्मत ही नहीं दिखाई। हमने पाकिस्तान जा रहा पानी रोकने का फैसला किया और अब इस पर तेजी से काम हो रहा है। भारत के हक का पानी अब भारत में ही रहेगा।

साथियों,

जब देश आजाद हुआ, तो बंटवारा किसकी सलाह से हुआ, किसके स्वार्थ की वजह से हुआ, क्यों जिन लोगों ने स्वतंत्र भारत की कमान संभाली वो बंटवारे के लिए तैयार हुए, मैं इसके विस्तार में नहीं जाना चाहता।

आप अच्छी किताबें पढ़ेंगे, पूर्वाग्रह से रहित इतिहासकारों की रचनाएं पढ़ेंगे, तो आपको सच्चाई पता चलेगी। लेकिन आज इस समय सिटिजनशिप अमेंडमेंट एक्ट को लेकर जो इतना भ्रम फैलाया जा रहा है, जो विरोध किया जा रहा है, उसकी सच्चाई देश के युवाओं को जानना आवश्यक है।

साथियों,

स्वतंत्रता के बाद से ही स्वतंत्र भारत ने पाकिस्तान में, बांग्लादेश में, अफगानिस्तान में रह गए हिंदुओं-सिखों और अन्य अल्पसंख्यकों से ये वादा किया था कि अगर उन्हें जरूरत होगी, तो वो भारत आ सकते हैं, भारत उनके साथ खड़ा रहेगा।

यही इच्छा गांधी जी की भी थी, यही 1950 में हुए नेहरू-लियाकत समझौते की भी भावना थी। इन देशों में जिन लोगों पर उनकी आस्था की वजह से अत्याचार हुआ, भारत का दायित्व था कि उन्हें शरण दे, उन्हें भारत की नागरिकता दे। लेकिन इस विषय से और ऐसे हजारों लोगों से मुंह फेर लिया गया।

ऐसे लोगों के साथ हुए ऐतिहासिक अन्याय को रोकने के लिए, भारत के पुराने वायदे को पूरा करने के लिए आज जब हमारी सरकार सिटिजनशिप अमेंडमेंट एक्ट लेकर आई है, ऐसे लोगों को भारत की नागरिकता दे रही है, तो कुछ राजनीतिक दल अपने वोटबैंक पर कब्जा करने की स्पर्धा में लगे हैं।

आखिर किसके हितों के लिए काम कर रहे हैं ये लोग?

क्यों इन लोगों को पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों पर हो रहे अत्याचार दिखाई नहीं देते?

सिर्फ आस्था की वजह से पाकिस्तान में इन बेटियों पर जो जुल्म होते हैं, उनके साथ बलात्कार होते हैं, उनका अपहरण होता है, इन सबको क्यों झुठलाने पर तुले हुए हैं ये लोग?

साथियों, इनमें से कुछ लोग शोषितों की आवाज बनने का ढोंग कर रहे हैं। ये वही लोग हैं जिन लोगों को पाकिस्तान में शोषितों पर अत्याचार दिखाई नहीं देता। ये लोग भूल जाते हैं कि पाकिस्तान से जो लोग धार्मिक प्रताड़ना की वजह से भागकर भारत आए हैं, उनमें से ज्यादातर शोषित ही हैं।

साथियों,

कुछ समय पहले पाकिस्तान में वहां की सेना ने एक विज्ञापन छपवाया था। सेना में सफाई-कर्मचारियों की भर्ती के लिए। उन विज्ञापनों में क्या लिखा था पता है आपको?

उनमें लिखा था- सफाई कर्मचारी के लिए वही अप्लाई कर सकते हैं जो मुसलिम नहीं हैं। यानि ये विज्ञापन किसके लिए था? हमारे इन्हीं शोषित भाई-बहनों के लिए। उनको इसी नजर से देखा जाता है पाकिस्तान में। ये स्थिति है वहां की।

साथियों,

बंटवारे के समय बहुत से लोग भारत छोड़कर चले गए। लेकिन यहां से जाने के बाद ये लोग यहां की संपत्तियों पर अपना हक जताते थे।

हमारे शहरों के बीचो-बीच खड़ी, लाखों करोड़ की इन संपत्तियों पर भारत का हक होते हुए भी ये देश के काम नहीं आ रही थीं। दशकों तक Enemy Property बिलको लटकाकर रखा गया। जब हम इसे लागू करवाने के लिए संसद में लेकर आए, तो कानून को पास करवाने में हमें नाको चने चबाने पड़ गए।

मैं फिर पूछूंगा- किसके हित के लिए ऐसा किया गया?

जो लोग सिटिजनशिप अमेंडमेंट एक्ट का विरोध करने निकले हैं, वही लोग Enemy Property कानून का विरोध कर रहे थे।

साथियों,

बंटवारे के बाद भारत और तब के पूर्वी पाकिस्तान, आज के बांग्लादेश के बीच भी कुछ क्षेत्रों में सीमा विवाद चलता रहा है। इस विवाद को सुलझाने के लिए भी कोई ठोस पहल नहीं हुई।

अगर सीमा ही विवादित रहेगी तो फिर घुसपैठ कैसे रुकेगी?

अपने निजी हित के लिए विवाद को लटकाए रखो, घुसपैठियों को आने का खुला रास्ता दो, अपनी राजनीति चलाते रहो, यही चल रहा था हमारे देश में।

ये हमारी सरकार है जिसने बांग्लादेश के साथ सीमा विवाद को सुलझाया। हमने दो मित्र देशों के साथ आमने-सामने बैठकर बात की, एक दूसरे को सुना, एक दूसरे को समझा और एक ऐसा समाधान निकाला जिसमें दोनों देश सहमत हों। मुझे संतोष है कि आज न सिर्फ सीमा विवाद सुलझ चुका है बल्कि भारत और बांग्लादेश के संबंध भी आज ऐतिहासिक स्तर पर हैं। हम दोनों आपस में मिलकर गरीबी से लड़ रहे हैं।

साथियों,

भारत के बंटवारे के समय कागज पर एक लकीर खींच दी गई थी। देश का विभाजन कर दिया गया था। कागज पर खींची गई इसी लकीर ने गुरुद्वारा करतारपुर साहिब को हमसे दूर कर दिया था, उसे पाकिस्तान का हिस्सा बना दिया था।

करतारपुर, गुरुनानक की भूमि थी। करोड़ों देशवासियों की आस्था उस पवित्र स्थान से जुड़ी थी। उसे क्यों छोड़ दिया गया? जब पाकिस्तान के 90 हजार सैनिकों को बंदी बनाया गया था, तभी कह दिया गया होता कि कम से कम करतारपुर साहिब तो हमें वापस दे दो।

लेकिन ये भी नहीं किया गया। दशकों से सिख श्रद्धालु इस इंतजार में थे कि उन्हें आसानी से करतारपुर पहुंचने का अवसर मिले, वो गुरुभूमि के दर्शन कर पाएं। करतारपुर कॉरिडोर बनाकर ये काम भी हमारी ही सरकार ने किया।

साथियों,

श्रीराम जन्मभूमि का केस अदालत में दशकों तक लटका रहा, तो उसके पीछे भी इन लोगों की यही सोच है- अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए अहम विषयों को लटकाओ, देश के लोगों को भटकाओ। ये लोग अदालतों के चक्कर काटते रहते थे कि किसी भी तरह सुनवाई टल जाए, अदालत फैसला न सुना पाए। क्या-क्या तरीके अपनाए गए, ये देश ने देखा है। इनकी सारी चालों को हमारी सरकार ने Expose किया, जो रोड़े ये लगा रहे थे, उन्हें हटाया और आज इतने महत्वपूर्ण और संवेदनशील केस का भी फैसला हो चुका है।

साथियों,

दशकों पुरानी समस्याओं की सुलझा रही हमारी सरकार के फैसले पर जो लोग सांप्रदायिकता का रंग चढ़ा रहे हैं, उनका असली चेहरा भी देश देख चुका है और देख रहा है।

मैं फिर कहूंगा- देश देख रहा है, समझ रहा है। चुप है, लेकिन सब समझ रहा है। वोटबैंक के लिए कैसे दशकों तक इन लोगों ने मनगढ़ंत झूठ फैलाए हैं, इसे भी देश जान गया है।

समाज के भिन्न-भिन्न स्तरों पर बैठे हुए ये लोग अब पूरी तरह Expose हो चुके हैं। हर रोज इनके बयान, इन्हें और इनकी सोच को Expose कर रहे हैं।

ये वो लोग हैं जिन्होंने स्वहित को हमेशा देशहित से ऊपर रखा। ऐसे लोगों ने वोटबैंक की पॉलिटिक्स करके समस्याओं को दशकों तक सुलझने नहीं दिया।

साथियों,

आप केडेट्स के जन्म से भी बहुत साल पहले, ये 1985-86 की बात थी जब देश की सबसे बड़ी अदालत ने, हमारे सुप्रीम कोर्ट ने मुसलिम महिलाओं को, देश की अन्य बहनों-बेटियों की तरह ही अधिकार देते हुए ऐतिहासिक फैसला सुनाया था। लेकिन इन लोगों ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले को ही पलट दिया। इतने वर्षों में जिन हजारों-लाखों मुसलिम बहनों-बेटियों को ट्रिपल तलाक की वजह से जिंदगी नर्क हुई, क्या उसके गुनहगार ये लोग नहीं हैं? हैं, बिल्कुल हैं।

इन लोगों की तुष्टिकरण की इसी राजनीति की वजह से मुसलिम बहनों-बेटियों को दशकों तक ट्रिपल तलाक के भय से मुक्ति नहीं मिल पाई। जबकि दुनिया के अनेक मुसलिम देश, अपने यहां ट्रिपल तलाक बैन कर चुके थे। लेकिन भारत में इन लोगों ने ऐसा करने नहीं दिया।

सोच वही थी- न बदलेंगे, न बदलने देंगे।

इसलिए देश ने इन लोगों को ही बदल दिया। ये हमारी सरकार है जिसने ट्रिपल तलाक के खिलाफ कानून बनाया है, मुसलिम महिलाओं को नए अधिकार दिए हैं।

साथियों,

जिस दिल्ली में ये आयोजन हो रहा है, उसी दिल्ली में, देश की राजधानी में, आजादी के बाद लाखों विस्थापितों को बसाया गया। समय के साथ और भी लाखों लोग दिल्ली आए और बसे। दिल्ली में ऐसी 1700 से ज्यादा कॉलोनियों में रहने वाले लोगों को दशकों तक, उनके घर का मालिकाना हक नहीं मिला था। कहने को घर अपना था, लेकिन कानून की नजर में नहीं। ऐसे 40 लाख से ज्यादा लोगों की मांग थी कि उन्हें अपने घर का मालिकाना हक तो दिया जाए।

लेकिन दशकों तक उनकी इस मांग पर ध्यान नहीं दिया गया। जब हमारी सरकार ने कोशिश की, तो उसमें भी रोड़े अटकाने का काम किया गया।

ये युवा भारत की सोच है, न्यू इंडिया की सोच है जिसने दिल्ली के 40 लाख लोगों के जीवन से, उनकी सबसे बड़ी चिंता को दूर कर दिया है। हमारी सरकार के फैसले का लाभ हिंदुओं को होगा और मुस्लिमों को भी, सिखों को होगा और ईसाइयों को भी।

साथियों,

हमारे लिए प्रत्येक देशवासी का महत्व है और इसी सोच के साथ हम आगे बढ़ रहे हैं। असम में जिस ब्रू-रियांग जनजाति का जिक्र मैंने पहले भी किया, उसे अपने हाल पर छोड़ दिया गया था, अब उन्हें भी उनके जीवन की सबसे बड़ी चिंता से हमारी ही सरकार ने मुक्त किया है। इन लोगों को मिजोरम से भागकर त्रिपुरा में शरण लेनी पड़ी थी। बरसों से ये लोग विस्थापित का जीवन जी रहे थे। न रहने का ठिकाना, न बच्चों का कोई भविष्य।

पहले की सरकारें इनकी समस्याओं को टाल रहीं थीं। हमने सबको साथ लिया और एक समाधान खोजा। आने वाले वर्षों में सरकार ब्रू-रियांग जनजाति का जीवन आसान बनाने के लिए 600 करोड़ रुपए खर्च करने जा रही है।

साथियों,

यहाँ बैठा हर नौजवान चाहता है कि देश में भ्रष्टाचार खत्म हो। भ्रष्टाचार हमारे देश के साधनों-संसाधनों को दीमक की तरह चाटता रहा। इसने अमीर को और अमीर बनाया, गरीब को और गरीब। यहां तक की देश के प्रधानमंत्री तक ने एक बार कहा था कि केंद्र सरकार गरीब के लिए अगर एक रुपया भेजती है तो सिर्फ 15 पैसा ही पहुंचता है। यही स्थिति थी। लेकिन इसे बदलने के लिए क्या किया गया? सिर्फ खानापूरी-सिर्फ दिखावा। ईमानदारी से भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्रवाई की कोशिश ही नहीं की गई।

हमारी सरकार ने जनधन आधार और मोबाइल की शक्ति से, आधुनिक टेक्नोलॉजी की मदद से, इस तरह के भ्रष्टाचार को काफी हद तक काबू में कर लिया है। हमारी सरकार ने ऐसा करके, 1 लाख 70 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा गलत हाथों में जाने से बचाए हैं।

साथियों,

1988 में देश में एक कानून बना था बेनामी संपत्ति के खिलाफ। देश की संसद ने इसे पास किया था। लेकिन 28 साल तक इस कानून को लागू ही नहीं किया गया। बेनामी संपत्ति के खिलाफ कानून को इन लोगों ने रद्दी की टोकरी में डाल दिया था।

ये हमारी ही सरकार है जिसने न सिर्फ बेनामी संपत्ति कानून लागू किया बल्कि हजारों करोड़ की अवैध संपत्ति इस कानून के तहत जब्त की जा चुकी है।

मैं आपसे एक और सवाल करता हूं। क्योंकि इसका जवाब सुनकर आप और भी चौंक जाएंगे।

आपके घर में जितनी बड़ी रसोई होती है, क्या उतनी जगह में 400-500 लोग आ सकते हैं?

नहीं न !!!

अच्छा ये बताइए, क्या रसोई जितनी जगह में 2 हजार, 3 हजार लोग आ सकते हैं?

नहीं न !!!

मुझे भी पता है। लेकिन पहले देश में कागजों पर ऐसा ही हो रहा था। रसोई जितनी जगह से देश में चार-चार सौ, पाँच-पाँच सौ कंपनियां चल रही थीं। कागज परइन कंपनियों के कई-कई कर्मचारी भी होते थे।

ये कंपनियां किस काम में आती थीं? इधर का काला धन उधर। उधर का काला धन इधर। यही इनका काम था।

हमारी सरकार ने ऐसी साढ़े तीन लाख से ज्यादा संदिग्ध शेल कंपनियों को बंद कर दिया है।

ये काम भी पहले हो सकता था। लेकिन नीयत नहीं थी, युवा भारत वाली सोच नहीं थी।

हम समस्याओं का समाधान चाहते हैं, उन्हें लटकाए रखना नहीं चाहते।

GST हो, गरीबों को आरक्षण का फैसला हो, रेप के जघन्य अपराधों में फांसी का कानून, हमारी सरकार इसी युवा सोच के साथ लोगों की बरसों पुरानी मांगों को पूरा करने का काम कर रही है।

साथियों,

20वीं सदी के 50 साल और 21वीं सदी के 15-20 साल, हमें दशकों पुरानी समस्याओं के साथ जीने की जैसे आदत हो रही थी।

किसी भी देश के लिए ये स्थिति ठीक नहीं। हम भारत के लोग, ऐसा नहीं होने दे सकते। हमारा कर्तव्य है कि हम अपने जीते जी इन समस्याओं से देश को मुक्त करें।

हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को, ऐसी समस्याओं में उलझाकर जाएंगे, तो देश के भविष्य के साथ अन्याय करेंगे। हम ऐसा नहीं होने दे सकते।

और इसलिए, मैं आने वाली पीढ़ियों के लिए, देश के युवाओं के भले के लिए, सारे राजनीतिक प्रपंचों का सामना कर रहा हूँ।

मैं इन लोगों की सारी साजिशों को नाकामयाब कर रहा हूँ, ताकि देश कामयाब हो सके। मैं सारी आलोचना, सारी गालियाँ सामने आकरखा रहा हूँ, ताकि हमारी आने वाली पीढ़ियों को इस स्थिति से नहीं गुजरना पड़े।

मैं हर गाली के लिए, हर आलोचना के लिए, हर जुल्म सहने के लिए तैयार हूँ लेकिन देश को इन परिस्थितियों में अटकाए रखने के लिए तैयार नहीं।

आजकल ये लोग प्रोपेगेंडा फैला रहे हैं, विदेशी मीडिया के अपने जैसे लोगों द्वारा ये फैला रहे हैं कि हमारी सरकार ने जो फैसले लिए, उसने मोदी की प्रतिष्ठा को चोट पहुंचाई है। मोदी इन बातों के लिए पैदा ही नहीं हुआ है। ये लोग बदलते हुए भारत को, समझ ही नहीं पाए हैं।

इनके दबावों का सामना करते हुए मुझे बरसों बीत गए हैं। जितना ये लोग खुद को नहीं जानते, उससे ज्यादा मैं इनकी रग-रग से और हर तिकड़म से वाकिफ हूँ। इसलिए ये लोग किसी भी भ्रम में न रहें।

साथियों,

अनेकों समस्याओं की बेड़ियों में जकड़ा हुआ देश, आगे कैसे बढ़ेगा?

हम समस्याओं का समाधान भी कर रहे हैं और बेड़ियों को भी तोड़ रहे हैं।

ये देश हमें ही मजबूत बनाना है, हमें ही इसे विकास की नई ऊँचाई पर पहुंचाना है।

साल 2022 में, जब हम अपनी स्वतंत्रता के 75 वर्ष का पर्व मनाएंगे, तब ऐसी अनेक समस्याओं से हमें देश को हमेशा-हमेशा के लिए मुक्त कर देना है।

स्वतंत्रता के बाद से चली आ रही समस्याओं से ये मुक्ति ही इस दशक में नए भारत को सशक्त करेगी।

जब देश पुरानी समस्याओं को समाप्त करके आगे बढ़ेगा, तो उसका सामर्थ्य भी खिल उठेगा।

भारत की ऊर्जा वहां लगेगी, जहां लगनी चाहिए।

चौथी औद्योगिक क्रांति में भारत को, युवा भारत को बहुत बड़ी भूमिका निभानी है। हमें अपनी अर्थव्यवस्था को नई ऊँचाई पर ले जाना है।

हमें मिलकर एक आत्मनिर्भर, सशक्त, समृद्ध और सुरक्षित भारत बनाना है।

साथियों,

वर्ष 2022, इतना बड़ा अवसर है, ये दशक इतना बड़ा अवसर है। इसकी सबसे बड़ी ताकत हमारी युवा ऊर्जा है। इसी ऊर्जा ने हमेशा देश संभाला है और यही ऊर्जा इस दशक को भी संभालेगी।

आइए, कर्तव्य पथ पर बढ़ चलें।

समस्याओं के समाधान के आगे, अब राष्ट्र निर्माण की नई मंजिलें हमारा इंतजार कर रही हैं।

इन मंजिलों पर हम मिलकर पहुंचेंगे, जरूर पहुंचेंगे, इसी विश्वास के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ।

आपका बहुत लंबा समय मैंने लिया।

एक बार फिर बहुत-बहुत धन्यवाद।

भारत माता की जय !!!

जय हिंद !!!

VRRK/VJ-5534

(रिलीज़ आईडी: 1601042) आगंतुक पटल : 149

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: Assamese , English , Urdu , Marathi , Manipuri , Punjabi , Gujarati

प्रधानमंत्री कार्यालय

भारत-चीन सीमा क्षेत्रों की स्थिति पर प्रधानमंत्री का वक्तव्य

प्रतिष्ठित तिथि: 17 JUN 2020 3:35PM by PIB Delhi

साथियों,

भारत माता के वीर सपूतों ने गलवान वैली में हमारी मातृभूमि की रक्षा करते हुये सर्वोच्च बलिदान दिया है।

मैं देश की सेवा में उनके इस महान बलिदान के लिए उन्हें नमन करता हूँ, उन्हें कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धांजलि देता हूँ।

दुःख की इस कठिन घड़ी में हमारे इन शहीदों के परिजनों के प्रति मैं अपनी समवेदनाएं व्यक्त करता हूँ।

आज पूरा देश आपके साथ है, देश की भावनाएं आपके साथ हैं।

हमारे इन शहीदों का ये बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा।

चाहे स्थिति कुछ भी हो, परिस्थिति कुछ भी हो, भारत पूरी दृढ़ता से देश की एक एक इंच जमीन की, देश के स्वाभिमान की रक्षा करेगा।

भारत सांस्कृतिक रूप से एक शांति प्रिय देश है। हमारा इतिहास शांति का रहा है।

भारत का वैचारिक मंत्र ही रहा है- लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु।

हमने हर युग में पूरे संसार में शांति की, पूरी मानवता के कल्याण की कामना की है।

हमने हमेशा से ही अपने पड़ोसियों के साथ एक cooperative और friendly तरीके से मिलकर काम किया है। हमेशा उनके विकास और कल्याण की कामना की है।

जहां कहीं हमारे मतभेद भी रहे हैं, हमने हमेशा ही ये प्रयास किया है कि मतभेद विवाद न बनें, differences disputes में न बदलें।

हम कभी किसी को भी उकसाते नहीं हैं, लेकिन हम अपने देश की अखंडता और संप्रभुता के साथ समझौता भी नहीं करते हैं।

जब भी समय आया है, हमने देश की अखंडता और संप्रभुता की रक्षा करने में अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया है, अपनी क्षमताओं को साबित किया है।

त्याग और तितिक्षा हमारे राष्ट्रीय चरित्र का हिस्सा हैं, लेकिन साथ ही विक्रम और वीरता भी उतना ही हमारे देश के चरित्र का हिस्सा हैं।

मैं देश को भरोसा दिलाना चाहता हूँ, हमारे जवानों का बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा।

हमारे लिए भारत की अखंडता और संप्रभुता सर्वोच्च है, और इसकी रक्षा करने से हमें कोई भी नहीं रोक सकता।

इस बारे में किसी को भी जरा भी भ्रम या संदेह नहीं होना चाहिए।

भारत शांति चाहता है। लेकिन भारत को उकसाने पर हर हाल में निर्णायक जवाब भी दिया जाएगा।

देश को इस बात का गर्व होगा की हमारे सैनिक मारते मारते मरे हैं। मेरा आप सभी से आग्रह है की हम दो मिनट का मौन रख के इन सपूतों को

श्रद्धांजलि दें.

VRRK/VJ

(रिलीज़ आईडी: 1632080) आगंतुक पटल : 937

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: Bengali , English , Urdu , Marathi , Manipuri , Assamese , Punjabi , Gujarati , Odia , Tamil , Telugu , Kannada , Malayalam

प्रधानमंत्री कार्यालय

लेह में भारतीय सशस्त्र बलों को प्रधानमंत्री के सम्बोधन का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 03 JUL 2020 5:50PM by PIB Delhi

भारत माता की - जय

भारत माता की - जय

साथियों, आपका ये हौसला, आपका शौर्य, और मां भारती के मान-सम्मान की रक्षा के लिए आपका समर्पण अतुलनीय है। आपकी जीवटता भी दुनिया में किसी से भी कम नहीं है। जिन कठिन परिस्थितियों में, जिस ऊंचाई पर आप मां भारती की ढाल बन करके उसकी रक्षा करते हैं, उसकी सेवा करते हैं, उसका मुकाबला पूरे विश्व में कोई नहीं कर सकता।

आपका साहस उस ऊंचाई से भी ऊंचा है जहां आप तैनात हैं। आपका निश्चय उस घाटी से भी सख्त है जिसको रोज आप अपने कदमों से नापते हैं। आपकी भुजाएं उन चट्टानों जैसी मजबूत हैं जो आपके इर्द-गिर्द खड़ी हैं। आपकी इच्छाशक्ति आसपास के पर्वतों जितनी अटल है। आज आपके बीच आकर मैं इसे महसूस कर रहा हूं। साक्षात अपनी आंखों से इसे देख रहा हूं।

साथियों, जब देश की रक्षा आपके हाथों में है, आपके मजबूत इरादों में है तो एक अटूट विश्वास है। सिर्फ मुझे नहीं, पूरे देश को अटूट विश्वास है और देश निश्चित भी है। आप जब सरहद पर डटे हैं तो यही बात प्रत्येक देशवासी को देश के लिए दिन-रात काम करने के लिए प्रेरित करती है। आत्मनिर्भर भारत का संकल्प आप लोगों के कारण, आपके त्याग, बलिदान, पुरुषार्थ के कारण और मजबूत होता है। और अभी जो आपने और आपके साथियों ने वीरता दिखाई है, उसने पूरी दुनिया में ये संदेश दिया है कि भारत की ताकत क्या है।

अभी मेरे सामने महिला फौजियों को भी देख रहा हूं। युद्ध के मैदान में, सीमा पर ये दृश्य अपने-आपको प्रेरणा देता है।

साथियों, राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर जी ने लिखा था-

जिनके सिंहनाद से सहमी। धरती रही अभी तक डोल।।

कलम, आज उनकी जय बोल। कलम आज उनकी जय बोल।।

तो मैं, आज अपनी वाणी से आपकी जय बोलता हूँ, आपका अभिनंदन करता हूँ। मैं गलवान घाटी में शहीद हुए अपने वीर जवानों को भी पुनः श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। इनमें पूरब से, पश्चिम से, उत्तर से, दक्षिण से, देश के हर कोने के वीर अपना शौर्य दिखाते थे। उनके पराक्रम, उनके सिंहनाद से धरती अब भी उनका जयकारा कर रही है। आज हर देशवासी का सिर आपके सामने, अपने देश के वीर सैनिकों के सामने आदरपूर्वक नतमस्तक हो करके नमन करता है। आज हर भारतीय की छाती आपकी वीरता और पराक्रम से फूली हुई है।

साथियों, सिंधु के आशीर्वाद से ये धरती पुण्य हुई है। वीर सपूतों के शौर्य और पराक्रम की गाथाओं को ये धरती अपने-आप में समेटे हुए है। लेह-लद्दाख से लेकर करगिल और सियाचिन तक, रिजांगला की बर्फीली चोटियों से लेकर गलवान घाटी के ठंडे पानी की धारा तक, हर चोटी, हर पहाड़, हर जर्ज़र-जर्ज़र, हर कंकड़-पत्थर भारतीय सैनिकों के पराक्रम की गवाही देते हैं। 14 corps की जांबाजी के किस्से तो हर तरफ हैं। दुनिया ने आपका अदम्य साहस देखा है, जाना है। आपकी शौर्य गाथाएं घर-घर में गूंज रही हैं और भारत माता के दुश्मनों ने आपकी fire भी देखी है और आपकी fury भी।

साथियों, लद्दाख का तो ये पूरा हिस्सा, ये भारत का मस्तक, 130 करोड़ भारतीयों के मान-सम्मान का प्रतीक है। ये भूमि भारत के लिए सर्वस्व त्याग करने के लिए हमेशा तैयार रहने वाले राष्ट्रभक्तों की धरती है। इस धरती ने कुशोकबकुला रिनपोछे जैसे महान राष्ट्रभक्त देश को दिए हैं। ये रिनपोछे जी ही, उन्हीं के कारण जिन्होंने दुश्मन के नापाक इरादों में स्थानीय लोगों को लामबंद किया। रिनपोछे की अगुवाई में यहां अलगाव पैदा करने की हर साजिश को लद्दाख की राष्ट्रभक्त जनता ने नाकाम किया है। ये उन्हीं के प्रेरक प्रयासों का परिणाम था कि देश को, भारतीय सेना को लद्दाख स्काउट नाम से Infantry regiment बनाने की प्रेरणा मिली। आज लद्दाख के लोग हर स्तर पर- चाहे वो सेना हो या सामान्य नागरिक के कर्तव्य हों, राष्ट्र को सशक्त करने के लिए अद्भुत योगदान दे रहे हैं।

साथियों, हमारे यहां कहा जाता है-

खड्गेन आक्रम्य वंदिता आक्रमणः पुणिया, वीर भोग्य वसुंधरा

यानी वीर अपने शस्त्र की ताकत से ही धरती की मातृभूमि की रक्षा करते हैं। ये धरती वीर-भोग्या है, वीरों के लिए है। इसकी रक्षा-सुरक्षा को हमारा समर्थन और सामर्थ्य, हमारा संकल्प हिमालय जितना ही ऊंचा है। ये सामर्थ्य और ये संकल्प, इस समय आपकी आंखों में मैं देख सकता हूँ। आपके चेहरों पर ये साफ-साफ नजर आता है। आप उसी धरती के वीर हैं जिसने हजारों वर्षों से अनेकों आक्रांताओं के हमलोंका, अत्याचारों का मुंहतोड़ जवाब दिया है। हम, और ये हमारी पहचान है, हम वो लोग हैं जो बांसुरीधारी कृष्ण की पूजा करते हैं। हम वही लोग हैं जो सुदर्शन चक्रधारी कृष्ण को भी आदर्श मान करके चलते हैं। इसी प्रेरणा से हर आक्रमण के बाद भारत और सशक्त होकर उभरा है।

साथियो, राष्ट्र की, दुनिया की, मानवता की प्रगति के लिए शांति और मित्रता हर कोई स्वीकार करता है, हर कोई मानता है बहुत जरूरी है। लेकिन हम ये भी जानते हैं कि शांति निर्बल कभी नहीं ला सकते। कमजोर शांति की पहल नहीं कर सकते। वीरता ही शांति की पूर्व शर्त होती है। भारत आज जल, थल, नभ और अंतरिक्ष तक अगर अपनी ताकत बढ़ा रहा है तो उसके पीछे का लक्ष्य मानव कल्याण ही है।

भारत आज आधुनिक अस्त्र-शस्त्र का निर्माण कर रहा है। दुनिया की आधुनिक से आधुनिक तकनीक भारत की सेना के लिए ला रहे हैं तो उसके पीछे की भावना भी यही है। भारत अगर आधुनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर का निर्माण तेजी से कर रहा है तो उसके पीछे का संदेश भी यही है।

विश्वयुद्ध को अगर हम याद करें, विश्व युद्ध हो या फिर शांति की बात- जब भी जरूरत पड़ी है विश्व ने हमारे वीरों का पराक्रम भी देखा है और विश्व शांति के उनके प्रयासों को महसूस भी किया है। हमने हमेशा मानवता की, इंसानियत की, humanity की रक्षा और सुरक्षा के लिए काम किया है, जीवन खपाया है। आप सभी भारत के इसी लक्ष्य को, भारत की इसी परंपरा को, भारत की इस महिमहान संस्कृति को स्थापित करने वाले अगुवा लीडर हैं।

साथियों, महान संत तिरुवल्लुवर जी ने सैंकड़ों वर्ष पूर्व कहा था-

**मरमानम मांड वडिच्चेलव् तेट्रम
येना नान्गे येमम पडईक्कु**

यानी शौर्य, सम्मान, मर्यादापूर्ण व्यवहार की परम्परा और विश्वसनीयता, ये चार गुण किसी भी देश की सेना का प्रतिबिम्ब होते हैं। भारतीय सेनाएं हमेशा से इसी मार्ग पर चली हैं।

साथियों, विस्तारवाद का युग समाप्त हो चुका है, ये युग विकासवाद का है। तेजी से बदलते हुए समय में विकासवाद ही प्रासंगिक है। विकासवाद के लिए ही अवसर हैं और विकासवाद ही भविष्य का आधार भी है। बीती शताब्दियों में विस्तारवाद ने ही मानवता का सबसे ज्यादा अहित किया, मानवता को विनाश करने का प्रयास किया। विस्तारवाद की जिद जब किसी पर सवार हुई है, उसने हमेशा विश्व शांति के सामने खतरा पैदा किया है।

और साथियों, ये न भूलें, इतिहास गवाह है कि ऐसी ताकतें मिट गई हैं या मुड़ने के लिए मजबूर हो गई हैं। विश्व का हमेशा यही अनुभव रहा है और इसी अनुभव के आधार पर अब इस बार फिर से पूरे विश्व ने विस्तारवाद के खिलाफ मन बना लिया है। आज विश्व विकासवाद को समर्पित है और विकास की खुली स्पर्धा का स्वागत कर रहा है।

साथियों, जब-जब मैं राष्ट्र रक्षा से जुड़े किसी निर्णय के बारे में सोचता हूं तो मैं सबसे पहले दो माताओं का स्मरण करता हूं- पहली हम सभी की भारतमाता, और दूसरी वे वीर माताएं जिन्होंने आप जैसे पराक्रमी योद्धाओं को जन्म दिया है, मैं उन दो माताओं को स्मरण करता हूं। मेरे निर्णय की कसौटी यही है। इसी कसौटी पर चलते हुए आपके सम्मान, आपके परिवार के सम्मान और भारत माता की सुरक्षा को देश सर्वोच्च प्राथमिकता देता है।

सेनाओं के लिए आधुनिक हथियार होंया आपके लिए जरूरी साजो-सामान, इन सभी पर हम बहुत ध्यान देते रहे हैं। अब देश में बॉर्डर इन्फ्रास्ट्रक्चर पर खर्च करीब-करीब तीन गुना कर दिया गया है। इससे बॉर्डर एरिया डेवलपमेंट और सीमा पर सड़कें, पुल बनाने का काम भी बहुत तेजी से हुआ है। इसका एक बहुत बड़ा लाभ ये भी हुआ है कि अब आप तक सामान भी कम समय में पहुंचता है।

साथियों, सेनाओं में बेहतर समन्वय के लिए लंबे समय से जिसकी आशा थी- वो Chief of Defense पद का गठन करने की बात हो या फिर National War Memorial का निर्माण; One rank one pension का फैसला हो या फिर आपके परिवार की देखरेख से लेकर शिक्षा तक की सही व्यवस्था के लिए लगातार काम, देश आज हर स्तर पर अपनी सेनाओं और सैनिकों को मजबूत कर रहा है।

साथियों, भगवान गौतम बुद्ध ने कहा है-

साहस का संबंध प्रतिबद्धता से है, conviction से है। साहस करुणा है, साहस compassion है। साहस वो है जो हमें निर्भीक और अडिग होकर सत्य के पक्ष में खड़े होना सिखाए। साहस वो है जो हमें सही को सही कहने और करने की ऊर्जा देता है।

साथियों, देश के वीर सपूतों ने गलवान घाटी में जो अदम्य साहस दिखाया, वो पराक्रम की पराकाष्ठा है। देश को आप पर गर्व है, आप पर नाज है। आपके साथ ही हमारे आईटीबीपी के जवान हों, बीएसएफ के साथी हों, हमारे बीआरओ और दूसरे संगठनों के जवान हों, मुश्किल हालात में काम कर रहे इंजीनियर हों, श्रमिक हों; आप सभी अद्भुत काम कर रहे हैं। हर कोई कंधे से कंधा मिलाकर मां भारती की रक्षा के लिए, मां भारती की सेवा में समर्पित है।

आज आप सभी की मेहनत से देश अनेक आपदाओं से एक साथ और पूरी दृढ़ता से लड़ रहा है। आप सभी से प्रेरणा लेते हुए हम मिलकर हर चुनौती पर, मुश्किल से मुश्किल चुनौती पर विजय प्राप्त करते रहें हैं, विजय प्राप्त करते रहेंगे। जिस भारत के सामने, और हम सबने जिस भारत के सपने को लेकर, और विशेष रूप से आप सब सरहद पर देश की रक्षा कर रहे हैं, हम उस सपने का भारत बनाएंगे। आपके सपनों का भारत बनाएंगे। 130 करोड़ देशवासी भी पीछे नहीं रहेंगे, ये मैं आज आपको विश्वास दिलाने आया हूँ। हम एक सशक्त और आत्मनिर्भर भारत बनाएंगे, बना करके ही रहेंगे। और आपसे प्रेरणा जब मिलती है तो आत्मनिर्भर भारत का संकल्प भी और ताकतवर हो जाता है।

मैं फिर एक बार आप सभी का हृदय से बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूँ, बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ। मेरे साथ पूरी ताकत से बोलिए-

भारत माता की - जय

भारत माता की - जय

वंदे मातरम - वंदे मातरम - वंदे मातरम

धन्यवाद

VRRK/SH/BM

(रिलीज़ आईडी: 1636191) आगंतुक पटल : 857

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English , Urdu , Marathi , Assamese , Manipuri , Bengali , Punjabi , Gujarati , Odia , Tamil , Telugu , Kannada , Malayalam

प्रधानमंत्री कार्यालय

लेह अस्पताल में घायल सैनिकों के साथ प्रधानमंत्री की बातचीत का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 03 JUL 2020 8:23PM by PIB Delhi

साथियों,

मैं आज आप सब को नमन करने आया हूँ। क्योंकि जिस वीरता के साथ लड़ाई लड़ी है, मैंने कुछ दिन पहले भी कहा था कि जो वीर हमें छोड़कर चले गए हैं वो भी ऐसे ही नहीं गए हैं। आप सबने मिल करके करारा जवाब भी दिया है। शायद आप घायल हैं, अस्पताल में हैं, इसलिए शायद आपको अंदाज न हो पाए। लेकिन 130 करोड़ देशवासी आप के प्रति बहुत ही गौरव अनुभव करते हैं। आपका ये साहस, शौर्य नई पीढ़ी को प्रेरणा दे रहा है और इसलिए आपका ये पराक्रम, आपका ये शौर्य और आपने ने जो किया है वो हमारी युवा पीढ़ी को, हमारे देशवासियों को आने वाले लंबे अर्से तक प्रेरणा देता रहेगा। और आज जो विश्व की स्थिति है, वहां जब ये मैसेज जाता है कि भारत के वीर जवान ये पराक्रम दिखाते हैं, ऐसी-ऐसी शक्तियों के सामने दिखाते हैं, तब तो दुनिया भी जानने को बड़ा उत्सुक रहती है कि वो जवान हैं कौन। उनकी ट्रेनिंग क्या है, उनका त्याग कितना ऊंचा है। उनका commitment कितना बढ़िया है। आज पूरा विश्व आपके पराक्रम का एनालिसिस कर रहा है।

मैं आज सिर्फ और सिर्फ आपको प्रणाम करने आया हूँ। आपको छू करके, आपको देख करके एक ऊर्जा लेकर जा रहा हूँ, एक प्रेरणा लेकर जा रहा हूँ। और हमारा भारत आत्मनिर्भर बने, दुनिया की किसी भी ताकत के सामने कभी न झुके हैं, न कभी झुकेंगे।

ये बात मैं बोल पा रहा हूँ आप जैसे वीर पराक्रमी साथियों के कारण। मैं आपको तो प्रणाम करता हूँ, आपको जन्म देने वाली आपकी वीर माताओं को भी प्रणाम करता हूँ। शतः शतः नमन करता हूँ, उन माताओं को जिन्होंने आप जैसे वीर योद्धाओं को जन्म दिया, पाला-पोसा है, लालन-पालन किया है और देश के लिए दे दिया है। उन माताओं का जितना गौरव करें, उनको जितना सर झुका करके नमन करें, उतना कम है।

फिर एक बार साथियो, आप बहुत जल्द ठीक हो जाएं, स्वास्थ्य लाभ हो, और पुनः संयम, पुनः सहयोग, इसी विचार के साथ आओ हम सब मिल करके चल पड़ें।

धन्यवाद दोस्तों।

एसजी/एएम/एसके

(रिलीज़ आईडी: 1636329) आगंतुक पटल : 290

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English , Urdu , Manipuri , Assamese , Bengali , Punjabi , Gujarati , Odia , Tamil , Telugu , Kannada , Malayalam

प्रधानमंत्री कार्यालय

‘मन की बात 2.0’ की 14वीं कड़ी में प्रधानमंत्री के सम्बोधन का मूल पाठ (26.07.2020)

प्रविष्टि तिथि: 26 JUL 2020 11:39AM by PIB Delhi

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार | आज 26 जुलाई है, और, आज का दिन बहुत खास है | आज, ‘कारगिल विजय दिवस’ है | 21 साल पहले आज के ही दिन कारगिल के युद्ध में हमारी सेना ने भारत की जीत का झंडा फहराया था | साथियो, कारगिल का युद्ध जिन परिस्थितियों में हुआ था, वो, भारत कभी नहीं भूल सकता | पाकिस्तान ने बड़े-बड़े मनसूबे पालकर भारत की भूमि हथियाने और अपने यहाँ चल रहे आन्तरिक कलह से ध्यान भटकाने को लेकर दुस्साहस किया था | भारत तब पाकिस्तान से अच्छे संबंधों के लिए प्रयासरत था, लेकिन, कहा जाता है ना

“बयरू अकारण सब काहू सों | जो कर हित अनहित ताहू सों ||

यानी, दुष्ट का स्वभाव ही होता है, हर किसी से बिना वजह दुश्मनी करना | ऐसे स्वभाव के लोग, जो हित करता है, उसका भी नुकसान ही सोचते हैं | इसीलिए भारत की मित्रता के जवाब में पाकिस्तान द्वारा पीठ में छुरा घोंपने की कोशिश हुई थी, लेकिन, उसके बाद भारत की वीर सेना ने जो पराक्रम दिखाया, भारत ने अपनी जो ताकत दिखाई, उसे पूरी दुनिया ने देखा | आप कल्पना कर सकते हैं – ऊँचे पहाड़ों पर बैठा हुआ दुश्मन और नीचे से लड़ रही हमारी सेनाएँ, हमारे वीर जवान, लेकिन, जीत पहाड़ की ऊँचाई की नहीं - भारत की सेनाओं के ऊँचे हौसले और सच्ची वीरता की हुई | साथियो, उस समय, मुझे भी कारगिल जाने और हमारे जवानों की वीरता के दर्शन का सौभाग्य मिला, वो दिन, मेरे जीवन के सबसे अनमोल क्षणों में से एक है | मैं, देख रहा हूँ कि, आज देश भर में लोग कारगिल विजय को याद कर रहे हैं | Social Media पर एक hashtag #courageinkargil के साथ लोग अपने वीरों को नमन कर रहे हैं, जो शहीद हुए हैं उन्हें श्रद्धांजलि दे रहे हैं | मैं, आज, सभी देशवासियों की तरफ से, हमारे इन वीर जवानों के साथ-साथ, उन वीर माताओं को भी नमन करता हूँ, जिन्होंने, माँ-भारती के सच्चे सपूतों को जन्म दिया | मेरा, देश के नौजवानों से आग्रह है, कि, आज दिन-भर कारगिल विजय से जुड़े हमारे जाबाजों की कहानियाँ, वीर-माताओं के त्याग के बारे में, एक-दूसरे को बताएँ, share करें | मैं, साथियो, आपसे एक आग्रह करता हूँ - आज | एक Website है www.gallantryawards.gov.in आप उसको ज़रूर Visit करें | वहाँ आपको, हमारे वीर पराक्रमी योद्धाओं के बारे में, उनके पराक्रम के बारे में, बहुत सारी जानकारियाँ प्राप्त होगी, और वो जानकारियाँ, जब, आप, अपने साथियों के साथ चर्चा करेंगे - उनके लिए भी प्रेरणा का कारण बनेगी | आप ज़रूर इस Website को Visit कीजिये, और मैं तो कहूँगा, बार-बार कीजिये |

साथियो, कारगिल युद्ध के समय अटल जी ने लालकिले से जो कहा था, वो, आज भी हम सभी के लिए बहुत प्रासंगिक है | अटल जी ने, तब, देश को, गाँधी जी के एक मंत्र की याद दिलायी थी | महात्मा गाँधी का मंत्र था, कि, यदि किसी को कभी कोई दुविधा हो, कि, उसे क्या करना, क्या न करना, तो, उसे भारत के सबसे गरीब और असहाय व्यक्ति के बारे में सोचना चाहिए | उसे ये सोचना चाहिए कि जो वो करने जा रहा है, उससे, उस व्यक्ति की भलाई होगी या नहीं होगी | गाँधी जी के इस विचार से आगे बढ़कर अटल जी ने कहा था, कि, कारगिल युद्ध ने, हमें एक दूसरा मंत्र दिया है - ये मंत्र था, कि, कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेने से पहले, हम ये सोचें, कि, क्या हमारा ये कदम, उस सैनिक के सम्मान के अनुरूप है जिसने उन दुर्गम पहाड़ियों में अपने प्राणों की आहुति दी थी | आइए अटल जी की आवाज़ में ही, उनकी इस भावना को, हम सुनें, समझें और समय की मांग है, कि, उसे स्वीकार करें |

Sound bite of Sh. Atal Ji ###

“हम सभी को याद है कि गाँधी जी ने हमें एक मंत्र दिया था। उन्होंने कहा था कि यदि कोई दुविधा हो कि तुम्हें क्या करना है, तो तुम भारत के उस सबसे असहाय व्यक्ति के बारे में सोचो और स्वयं से पूछो कि क्या तुम जो करने जा रहे हो उससे उस व्यक्ति की भलाई होगी। कारगिल ने हमें दूसरा मंत्र दिया है – कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेने से पहले हम ये सोचें कि क्या हमारा ये कदम उस सैनिक के सम्मान के अनुरूप है, जिसने उन दुर्गम पहाड़ियों में अपने प्राणों की आहुति दी थी।”

साथियो, युद्ध की परिस्थिति में, हम जो बात कहते हैं, करते हैं, उसका सीमा पर डटे सैनिक के मनोबल पर उसके परिवार के मनोबल पर बहुत गहरा असर पड़ता है। ये बात हमें कभी भूलनी नहीं चाहिए और इसीलिए हमारा आचार, हमारा व्यवहार, हमारी वाणी, हमारे बयान, हमारी मर्यादा, हमारे लक्ष्य, सभी, कसौटी में ये जरूर रहना चाहिए कि हम जो कर रहे हैं, कह रहे हैं, उससे सैनिकों का मनोबल बढ़े, उनका सम्मान बढ़े। राष्ट्र सर्वोपरी का मंत्र लिए, एकता के सूत्र में बंधे देशवासी, हमारे सैनिकों की ताकत को कई हजार गुणा बढ़ा देते हैं। हमारे यहाँ तो कहा गया है न ‘संघे शक्ति कलौ युगे’

कभी-कभी हम इस बात को समझे बिना Social Media पर ऐसी चीजों को बढ़ावा दे देते हैं जो हमारे देश का बहुत नुकसान करती हैं। कभी-कभी जिज्ञासावश forward करते रहते हैं। पता है गलत है ये - करते रहते हैं। आजकल, युद्ध, केवल सीमाओं पर ही नहीं लड़े जाते हैं, देश में भी कई मोर्चों पर एक साथ लड़ा जाता है, और, हर एक देशवासी को उसमें अपनी भूमिका तय करनी होती है। हमें भी अपनी भूमिका, देश की सीमा पर, दुर्गम परिस्थितियों में लड़ रहे सैनिकों को याद करते हुए तय करनी होगी।

मेरे प्यारे देशवासियो, पिछले कुछ महीनों से पूरे देश ने एकजुट होकर जिस तरह कोरोना से मुकाबला किया है, उसने, अनेक आशंकाओं को गलत साबित कर दिया है। आज, हमारे देश में recovery rate अन्य देशों के मुकाबले बेहतर है, साथ ही, हमारे देश में कोरोना से मृत्यु-दर भी दुनिया के ज्यादातर देशों से काफी कम है। निश्चित रूप से एक भी व्यक्ति को खोना दुःखद है, लेकिन भारत, अपने लाखों देशवासियों का जीवन बचाने में सफल भी रहा है। लेकिन साथियो, कोरोना का खतरा टला नहीं है। कई स्थानों पर यह तेजी से फैल रहा है। हमें बहुत ही ज्यादा सतर्क रहने की जरूरत है। हमें यह ध्यान रखना है कि कोरोना अब भी उतना ही घातक है, जितना, शुरू में था, इसीलिए, हमें पूरी सावधानी बरतनी है। चेहरे पर mask लगाना या गमछे का उपयोग करना, दो गज की दूरी, लगातार हाथ धोना, कहीं पर भी थूकना नहीं, साफ़ सफाई का पूरा ध्यान रखना - यही हमारे हथियार हैं जो हमें कोरोना से बचा सकते हैं। कभी-कभी हमें mask से तकलीफ होती है और मन करता है कि चेहरे पर से mask हटा दें। बातचीत करना शुरू करते हैं। जब mask की जरूरत होती है ज्यादा, उसी समय, mask हटा देते हैं। ऐसे समय, मैं, आप से आग्रह करूँगा जब भी आपको mask के कारण परेशानी feel होती हो, मन करता हो उतार देना है, तो, पल-भर के लिए उन Doctors का स्मरण कीजिये, उन नर्सों का स्मरण कीजिये, हमारे उन कोरोना वारियर्स का स्मरण कीजिये, आप देखिये, वो, mask पहनकर के घंटों तक लगातार, हम सबके जीवन को, बचाने के लिए जुटे रहते हैं। आठ-आठ, दस-दस घंटे तक mask पहने रखते हैं। क्या उनको तकलीफ नहीं होती होगी! थोड़ा सा उनका स्मरण कीजिये, आपको भी लगेगा कि हमें एक नागरिक के नाते इसमें जरा भी कोताही ना बरतनी है और न किसी को बरतने देनी है। एक तरफ हमें कोरोना के खिलाफ लड़ाई को पूरी सजगता और सतर्कता के साथ लड़ना है, तो दूसरी ओर, कठोर मेहनत से, व्यवसाय, नौकरी, पढ़ाई, जो भी, कर्तव्य हम निभाते हैं, उसमें गति लानी है, उसको भी नई ऊँचाई पर ले जाना है। साथियो, कोरोना काल में तो हमारे ग्रामीण क्षेत्रों ने पूरे देश को दिशा दिखाई है। गांवों से स्थानीय नागरिकों के, ग्राम पंचायतों के, अनेक अच्छे प्रयास लगातार सामने आ रहे हैं। जम्मू में एक ग्राम त्रेवा ग्राम पंचायत है। वहाँ की सरपंच हैं बलबीर कौर जी। मुझे बताया गया कि बलबीर कौर जी ने अपनी पंचायत में 30 bed का एक Quarantine Centre बनवाया। पंचायत आने वाले रास्तों पर, पानी की व्यवस्था की। लोगों को हाथ धोने में कोई दिक्कत न हो - इसका इंतजाम करवाया। इतना ही नहीं, ये बलबीर कौर जी, खुद, अपने कंधे पर spray pump टांगकर, Volunteers के साथ मिलकर, पूरी पंचायत में, आस-पास क्षेत्र में, sanitization का काम भी करती हैं। ऐसी

ही एक और कश्मीरी महिला सरपंच हैं। गान्दरबल के चौटलीवार की जैतूना बेगम। जैतूना बेगम जी ने तय किया कि उनकी पंचायत कोरोना के खिलाफ जंग लड़ेगी और कमाई के लिए अवसर भी पैदा करेगी। उन्होंने, पूरे इलाके में free mask बांटे, free राशन(ration) बांटा, साथ ही उन्होंने लोगों को फसलों के बीज और सेब के पौधे भी दिए, ताकि, लोगों को खेती में, बागवानी में, दिक्कत न आये। साथियो, कश्मीर से एक और प्रेरक घटना है, यहाँ, अनंतनाग में municipal president हैं - श्रीमान मोहम्मद इकबाल, उन्हें, अपने इलाके में sanitization के लिए sprayer की जरूरत थी। उन्होंने, जानकारी जुटाई, तो पता चला कि मशीन, दूसरे शहर से लानी पड़ेगी और कीमत भी होगी छः लाख रूपये, तो, श्रीमान इकबाल जी ने खुद ही प्रयास करके अपने आप sprayer मशीन बना ली और वो भी केवल पचास हजार रूपये में - ऐसे, कितने ही और उदाहरण हैं। पूरे देश में, कोने-कोने में, ऐसी कई प्रेरक घटनाएँ रोज सामने आती हैं, ये सभी, अभिनंदन के अधिकारी हैं। चुनौती आई, लेकिन लोगों ने, उतनी ही ताकत से, उसका सामना भी किया।

मेरे प्यारे देशवासियो, सही approach से सकारात्मक approach से हमेशा आपदा को अवसर में, विपत्ति को विकास में बदलने में, बहुत मदद मिलती है। अभी, हम कोरोना के समय भी देख रहे हैं, कि, कैसे हमारे देश के युवाओं-महिलाओं ने, अपने talent और skill के दम पर कुछ नये प्रयोग शुरू किये हैं। बिहार में कई women self help groups ने मधुबनी painting वाले mask बनाना शुरू किया है, और देखते-ही-देखते, ये खूब popular हो गये हैं। ये मधुबनी mask एक तरह से अपनी परम्परा का प्रचार तो करते ही हैं, लोगों को, स्वास्थ्य के साथ, रोजगारी भी दे रहे हैं। आप जानते ही हैं North East में bamboo यानी, बाँस, कितनी बड़ी मात्रा में होता है, अब, इसी बाँस से त्रिपुरा, मणिपुर, असम के कारीगरों ने high quality की पानी की बोतल और Tiffin Box बनाना शुरू किया है। bamboo से, आप, अगर, इनकी quality देखेंगे तो भरोसा नहीं होगा कि बाँस की बोतलें भी इतनी शानदार हो सकती हैं, और, फिर ये बोतलें eco-friendly भी हैं। इन्हें, जब बनाते हैं, तो, बाँस को पहले नीम और दूसरे औषधीय पौधों के साथ उबाला जाता है, इससे, इनमें औषधीय गुण भी आते हैं। छोटे-छोटे स्थानीय products से कैसे बड़ी सफलता मिलती है, इसका, एक उदाहरण झारखंड से भी मिलता है। झारखंड के बिशुनपुर में इन दिनों 30 से ज्यादा समूह मिलकर के lemon grass की खेती कर रहे हैं। lemon grass चार महीनों में तैयार हो जाती है, और, उसका तेल बाज़ार में अच्छे दामों में बिकता है। इसकी आजकल काफी माँग भी है। मैं, देश के दो इलाकों के बारे में भी बात करना चाहता हूँ, दोनों ही, एक-दूसरे से सैकड़ों किलोमीटर दूर हैं, और, अपने-अपने तरीके से भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कुछ हटकर के काम कर रहे हैं - एक है लद्दाख, और दूसरा है कच्छ। लेह और लद्दाख का नाम सामने आते ही खूबसूरत वादियाँ और ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों के दृश्य हमारे सामने आ जाते हैं, ताज़ी हवा के झोंके महसूस होने लगते हैं। वहीं कच्छ का ज़िक्र होते ही रेगिस्तान, दूर-दूर तक रेगिस्तान, कहीं पेड़-पौधा भी नज़र ना आये, ये सब, हमारे सामने आ जाता है। लद्दाख में एक विशिष्ट फल होता है जिसका नाम चूली या apricot यानी खुबानी है। ये फसल, इस क्षेत्र की economy को बदलने की क्षमता रखती है, परन्तु, अफ़सोस की बात ये है, supply chain, मौसम की मार, जैसे, अनेक चुनौतियों से ये जूझता रहता है। इसकी कम-से-कम बर्बादी हो, इसके लिए, आजकल, एक नए innovation का इस्तेमाल शुरू हुआ है - एक Dual system है, जिसका नाम है, solar apricot dryer and space heater। ये, खुबानी और दूसरे अन्य फलों एवं सब्जियों को जरूरत के अनुसार सुखा सकता है, और वो भी hygienic तरीके से। पहले, जब खुबानी को खेतों के पास सुखाते थे, तो, इससे बर्बादी तो होती ही थी, साथ ही, धूल और बारिश के पानी की वजह से फलों की quality भी प्रभावित होती थी। दूसरी ओर, आजकल, कच्छ में किसान Dragon Fruits की खेती के लिए सराहनीय प्रयास कर रहे हैं। बहुत से लोग जब सुनते हैं, तो, उन्हें आश्चर्य होता है - कच्छ और Dragon Fruits। लेकिन, यहाँ, आज कई किसान इस कार्य में जुटे हैं। फल की गुणवत्ता और कम ज़मीन में ज्यादा उत्पाद को लेकर काफी innovation किये जा रहे हैं। मुझे बताया गया है कि Dragon Fruits की लोकप्रियता लगातार बढ़ रही है, विशेषकर, नाश्ते में इस्तेमाल काफी बढ़ा है। कच्छ के किसानों का संकल्प है, कि, देश को Dragon Fruits का आयात ना करना पड़े - यही तो आत्मनिर्भरता की बात है।

साथियो, जब हम कुछ नया करने का सोचते हैं, Innovative सोचते हैं, तो, ऐसे काम भी संभव हो जाते हैं, जिनकी आम-तौर पर, कोई कल्पना नहीं करता, जैसे कि, बिहार के कुछ युवाओं को ही लीजिये। पहले ये सामान्य नौकरी करते थे। एक दिन, उन्होंने, तय किया कि वो मोती यानी pearls की खेती करेंगे। उनके क्षेत्र में, लोगों को इस बारे में बहुत पता नहीं था, लेकिन, इन लोगों ने, पहले, सारी जानकारी जुटाई, जयपुर और भुवनेश्वर जाकर training ली और अपने गाँव में ही मोती की खेती शुरू कर दी। आज, ये, स्वयं तो इससे काफ़ी कमाई कर ही रहे हैं, उन्होंने, मुजफ्फरपुर, बेगूसराय और पटना में अन्य राज्यों से लौटे प्रवासी मजदूरों को इसकी training देनी भी शुरू कर दी है। कितने ही लोगों के लिए, इससे, आत्मनिर्भरता के रास्ते खुल गए हैं।

साथियो, अभी कुछ दिन बाद रक्षाबंधन का पावन पर्व आ रहा है। मैं, इन दिनों देख रहा हूँ कि कई लोग और संस्थायें इस बार रक्षाबंधन को अलग तरीके से मनाने का अभियान चला रहें हैं। कई लोग इसे Vocal for local से भी जोड़ रहे हैं, और, बात भी सही है। हमारे पर्व, हमारे समाज के, हमारे घर के पास ही किसी व्यक्ति का व्यापार बढ़े, उसका भी पर्व खुशहाल हो, तब, पर्व का आनंद, कुछ और ही हो जाता है। सभी देशवासियों को रक्षाबंधन की बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

साथियो, 7 अगस्त को National Handloom Day है। भारत का Handloom, हमारा Handicraft, अपने आप में सैकड़ों वर्षों का गौरवमयी इतिहास समेटे हुए है। हम सभी का प्रयास होना चाहिए कि न सिर्फ़ भारतीय Handloom और Handicraft का ज्यादा-से-ज्यादा उपयोग करें, बल्कि, इसके बारे में, हमें, ज्यादा-से-ज्यादा लोगों को बताना भी चाहिए। भारत का Handloom और Handicraft कितना rich है, इसमें कितनी विविधता है, ये दुनिया जितना ज्यादा जानेगी, उतना ही, हमारे Local कारीगरों और बुनकरों को लाभ होगा।

साथियो, विशेषकर मेरे युवा साथियो, हमारा देश बदल रहा है। कैसे बदल रहा है? कितनी तेज़ी से बदल रहा है? कैसे-कैसे क्षेत्रों में बदल रहा है? एक सकारात्मक सोच के साथ अगर निगाह डालें तो हम खुद अचंभित रह जायेंगे। एक समय था, जब, खेल-कूद से लेकर के अन्य sectors में अधिकतर लोग या तो बड़े-बड़े शहरों से होते थे या बड़े-बड़े परिवार से या फिर नामी-गिरामी स्कूल या कॉलेज से होते थे। अब, देश बदल रहा है। गांवों से, छोटे शहरों से, सामान्य परिवार से हमारे युवा आगे आ रहे हैं। सफलता के नए शिखर चूम रहे हैं। ये लोग संकटों के बीच भी नए-नए सपने संजोते हुए आगे बढ़ रहे हैं। कुछ ऐसा ही हमें अभी हाल ही में जो Board exams के result आये, उसमें भी दिखता है। आज 'मन की बात' में हम कुछ ऐसे ही प्रतिभाशाली बेटे-बेटियों से बात करते हैं। ऐसी ही एक प्रतिभाशाली बेटी है कृतिका नांदल। कृतिका जी हरियाणा में पानीपत से हैं।

मोदी जी – हेलो, कृतिका जी नमस्ते।

कृतिका – नमस्ते सर।

मोदी जी – इतने अच्छे परिणाम के लिए आपको बहुत-बहुत बधाई।

कृतिका – धन्यवाद सर।

मोदी जी – और आपको तो इन दिनों टेलिफोन लेते-लेते भी आप थक गयी होंगी। इतने सारे लोगों के फ़ोन आते होंगे।

कृतिका – जी सर।

- मोदी जी – और जो लोग बधाई देते हैं, वो भी गर्व महसूस करते होंगे कि वो आपको जानते हैं | आपको कैसा लग रहा है |
- कृतिका – सर बहुत अच्छा लग रहा है | parents को proud feel करा के खुद को भी इतना proud feel हो रहा है |
- मोदी जी - अच्छा ये बताइये कि आपकी सबसे बड़ी प्रेरणा कौन है |
- कृतिका – सर, मेरे मम्मी है सबसे बड़ी प्रेरणा तो मेरी |
- मोदी जी – वाह | अच्छा, आप मम्मी से क्या सीख रही हो |
- कृतिका – सर, उन्होंने अपनी ज़िंदगी में इतनी मुश्किलें देखी हैं
फिर भी वो इतनी bold और इतनी strong हैं, सर | उन्हें देख-देख के इतनी प्रेरणा मिलती है कि मैं भी उन्हीं की तरह बनूँ |
- मोदी जी - माँ कितनी पढ़ी-लिखी हैं |
- कृतिका – सर, BA किया हुआ है उन्होंने |
- मोदी जी – BA किया हुआ है |
- कृतिका – जी सर |
- मोदी जी – अच्छा | तो, माँ आपको सिखाती भी होगी |
- कृतिका – जी सर | सिखाती हैं, दुनिया-दारी के बारे में हर बात बताती हैं |
- मोदी जी – वो, डांटती भी होगी |
- कृतिका – जी सर, डांटती भी हैं |
- मोदी जी – अच्छा बेटा, आप आगे क्या करना चाहती हैं ?
- कृतिका – सर हम डॉक्टर बनना चाहते हैं |
- मोदी जी – अरे वाह !
- कृतिका – MBBS
- मोदी जी – देखिये डॉक्टर बनना आसान काम नहीं है !
- कृतिका – जी सर |
- मोदी जी – Degree तो प्राप्त कर लेगी क्योंकि आप बड़ी तेजस्वी हो बेटा, लेकिन, डॉक्टर का जीवन जो है, वो, समाज के लिये बहुत समर्पित होता है |
- कृतिका – जी सर |
- मोदी जी – उसको कभी रात को, चैन से कभी सो भी नहीं सकता

है। कभी patient का फ़ोन आ जाता है, अस्पताल से फ़ोन आ जाता है तो फिर दौड़ना पड़ता है। यानी एक प्रकार से 24x7, Three Sixty Five Days. डॉक्टर की ज़िंदगी लोगों की सेवा में लगी रहती है।

कृतिका – Yes Sir.

मोदी जी - और खतरा भी रहता है, क्योंकि, कभी पता नहीं,

आजकल के जिस प्रकार की बीमारियाँ हैं तो डॉक्टर के सामने भी बहुत बड़ा संकट रहता है।

कृतिका – जी सर,

मोदी जी – अच्छा कृतिका, हरियाणा तो खेल-कूद में पूरे हिन्दुस्तान

के लिये हमेशा ही प्रेरणा देने वाला, प्रोत्साहन देने वाला राज्य रहा है।

कृतिका – हाँजी सर।

मोदी जी – तो आप भी तो कोई खेल-कूद में भाग लेती हैं क्या,

कुछ खेल-कूद पसंद है क्या आपको ?

कृतिका – सर, बास्केटबाल खेलते थे, स्कूल में

मोदी जी – अच्छा, आपकी ऊँचाई कितनी है, ज्यादा है ऊँचाई

कृतिका – नहीं सर, पांच दो की है।

मोदी जी – अच्छा, तो फिर तुम्हारे खेल में पसंद करते हैं ?

कृतिका – सर वो तो बस passion है, खेल लेते हैं

मोदी जी – अच्छा-अच्छा। चलिये कृतिका जी, आपके माताजी को

मेरी तरफ से प्रणाम कहिये, उन्होंने, आपको इस प्रकार के योग्य बनाया। आपके जीवन को बनाया। आपकी माताजी को प्रणाम और आपको बहुत-बहुत बधाई, बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

कृतिका – धन्यवाद सर।

आइये ! अब हम चलते हैं केरला, एर्नाकुलम (Ernakulam)। केरला के नौजवान से बात करेंगे।

मोदी जी – हेलो

विनायक - हेलो सर नमस्कार।

मोदी जी – So विनायक, congratulation

विनायक – हाँ, Thank you sir,

मोदी जी – शाबाश विनायक, शाबाश

विनायक – हाँ, Thank you sir,

मोदी जी – How is the जोश
विनायक – High sir
मोदी जी – Do you play any sport?
विनायक – Badminton.
मोदी जी – Badminton
विनायक – हाँ yes.
मोदी जी – In a school or you have any chance to take a training ?
विनायक – No, In school we have already get some training
मोदी जी – हूँ हूँ
विनायक – from our teachers.
मोदी जी – हूँ हूँ
विनायक – So that we get opportunity to participate outside
मोदी जी – Wow
विनायक – From the school itself
मोदी जी – How many states you have visited ?
विनायक – I have visited only Kerala and Tamilnadu
मोदी जी – Only Kerala and Tamilnadu,
विनायक – Oh yes
मोदी जी – So, would you like to visit Delhi ?
विनायक – हाँ Sir, now, I am applying in Delhi University for my
Higher Studies.
मोदी जी – Wah, so you are coming to Delhi
विनायक – हाँ yes sir.
मोदी जी – tell me, do you have any message for fellow students
who will give Board Exams in future
विनायक – hard work and proper time utilization
मोदी जी – So perfect time management
विनायक – हाँ, sir
मोदी जी – Vinayak, I would like to know your hobbies.
विनायक –Badminton and than rowing.

- मोदी जी – So, you are active on social media
- विनायक – Not, we are not allowed to use any electronic items or gadgets in the school
- मोदी जी – So you are lucky
- विनायक – Yes Sir,
- मोदी जी – Well, Vinayak, congratulations again and wish you all the best.
- विनायक – Thank you sir.

आइये ! हम उत्तर प्रदेश चलते हैं | उत्तर प्रदेश में अमरोहा के श्रीमान् उस्मान सैफी से बात करेंगे |

मोदी जी – हेलो उस्मान, बहुत-बहुत बधाई, आपको ढेरों-ढेरों बधाई

उस्मान – Thank you sir.

मोदी जी – अच्छा आप उस्मान बताइये, कि आपने जो चाहा था वही result मिला कि कुछ कम आया

उस्मान – नहीं, जो चाहा था वही मिला है | मेरे parents भी बहुत खुश हैं |

मोदी जी – वाह, अच्छा परिवार में और भाई भी, बहुत इतने ही तेजस्वी हैं कि घर में आप ही हैं जो इतने तेजस्वी हैं |

उस्मान – सिर्फ मैं ही हूँ, मेरा भाई वो थोड़ा सा शरारती है

मोदी जी – हाँ, हाँ

उस्मान – बाकी मुझे लेकर बहुत खुश रहता है |

मोदी जी – अच्छा, अच्छा | अच्छा आप जब पढ़ रहे थे, तो उस्मान आपका पसंदीदा विषय क्या था ?

उस्मान – Mathematics

मोदी जी – अरे वाह ! तो क्या mathematic में क्या रूचि रहती थी? कैसे हुआ ? किस teacher ने आपको प्रेरित किया?

उस्मान – जी हमारे एक subject teacher रजत सर | उन्होंने मुझे

प्रेरणा दी और वो बहुत अच्छा पढ़ाते हैं और mathematics शुरू से ही मेरा अच्छा रहा है और वो काफी interesting subject भी

- मोदी जी – हूँ, हूँ
- उस्मान – तो जितना ज्यादा करते हैं, उतना ज्यादा interest आता है तो इसलिए मेरा favourite subject
- मोदी जी – हूँ, हूँ, | आपको मालूम है एक online vedic mathematics के classes चलते हैं
- उस्मान – Yes sir.
- मोदी जी – हाँ कभी try किया है इसका ?
- उस्मान – नहीं सर, अभी नहीं किया
- मोदी जी – आप देखिये, आप बहुत सारे आपके दोस्तों को लगेगा जैसे आप जादूगर हैं क्योंकि कंप्यूटर की speed से आप गिनती कर सकते हैं Vedic mathematics की | बहुत सरल techniques हैं और आजकल वो online पर भी available होते हैं |
- उस्मान – जी सर |
- मोदी जी – क्योंकि आपकी mathematics में interest है, तो बहुत सी नई-नई चीज़ें भी आप दे सकते हैं |
- उस्मान – जी सर |
- मोदी जी – अच्छा उस्मान, आप खाली समय में क्या करते हैं ?
- उस्मान – खाली समय में सर, कुछ-न-कुछ लिखता रहता हूँ मैं | मुझे लिखने में बहुत interest आता है |
- मोदी जी – अरे वाह ! मतलब आप mathematics में भी रूचि लेते हैं literature में भी रूचि लेते हैं |
- उस्मान – yes sir
- मोदी जी – क्या लिखते हैं? कविताएँ लिखते हैं, शायरियाँ लिखते हैं
- उस्मान – कुछ भी current affairs से related कोई भी topic हो उस पर लिखता रहता हूँ |
- मोदी जी – हाँ, हाँ
- उस्मान – नयी-नयी जानकारियाँ मिलती रहती हैं जैसे GST चला था और हमारा नोटबंदी – सब चीज़ |
- मोदी जी – अरे वाह ! तो आप कॉलेज की पढाई करने के लिए आगे का क्या plan बना रहे हैं ?
- उस्मान – कॉलेज की पढाई, सर मेरा, JEE Mains का first attempt

clear हो चुका है और अब मैं september के लिए second attempt में अब बैठूंगा | मेरा main aim है कि, मैं पहले IIT से पहले Bachelor Degree लूं और उसके बाद Civil Services में जाऊँ और एक IAS बनूँ।

मोदी जी – अरे वाह ! अच्छा आप technology में भी रूचि लेते हैं?

उस्मान – Yes sir. इसलिए मैंने IT opt किया है first time best IIT का।

मोदी जी – अच्छा चलिए उस्मान, मेरी तरफ से बहुत शुभकामनाएं

हैं और आपका भाई शरारती है, तो आपका समय भी अच्छा जाता होगा और आपके माताजी-पिताजी को भी मेरी तरफ से प्रणाम कहिये | उन्होंने आपको इस प्रकार से अवसर दिया, हौसला बुलन्द किया, और ये मुझे अच्छा लगा कि आप पढ़ाई के साथ-साथ current issues पर अध्ययन भी करते हैं और लिखते भी हैं | देखिये लिखने का फायदा ये होता है कि आपके विचार में sharpness आती है | बहुत-बहुत अच्छा फायदा होता है लिखने से | तो, बहुत-बहुत बधाई, मेरी तरफ से

उस्मान – Thank you sir.

आइये ! चलिए फिर एकदम से नीचे South में चले जाते हैं | तमिलनाडु, नामाक्कल से बेटी कनिग्गा से बात करेंगे और कनिग्गा की बात तो बहुत ही inspirational है |

मोदी जी : कनिग्गा जी, वडक्कम (Vadakam)

कनिग्गा: वडक्कम (Vadakam) Sir

मोदी जी : How are you

कनिग्गा: Fine sir

मोदी जी : first of all I would like to congratulate you for your great success.

कनिग्गा: Thank you sir.

मोदी जी : When I hear of Namakkal I think of the Anjaneyar temple

कनिग्गा: Yes sir.

मोदी जी : Now I will also remember my interaction with you.

कनिग्गा: Yes sir.

मोदी जी : So, Congratulations again.

कनिग्गा: Thank you sir.

मोदी जी : You would have worked very hard for exams, how was

your experience while preparing.

कनिग्गा: Sir, we are working hard from the start so, I didn't expect this result but I have written well so I get a good result.

मोदी जी : What were your expectation ?

कनिग्गा: 485 or 486 like that, I thought so

मोदी जी : and now

कनिग्गा: 490

मोदी जी : So what is the reaction of your family members & your teachers?

कनिग्गा: They were so happy and they were so proud sir.

मोदी जी : Which one is your favorite subject.

कनिग्गा : Mathematics

मोदी जी : Ohh! And what are your future plans?

कनिग्गा: I'm going to become a Doctor if possible in AFMC sir.

मोदी जी : And your family members are also in a medical profession or somewhere else ?

कनिग्गा: No sir, my father is a driver but my sister is studying in MBBS sir.

मोदी जी : अरे वाह ! so first of all I will do the प्रणाम to your father who is taking lot of care your sister and yourself. It's great service he is doing

कनिग्गा: Yes sir

मोदी जी : and he is inspiration for all.

कनिग्गा: Yes sir

मोदी जी : So my congratulations to you, your sister and your father and your family.

कनिग्गा: Thank you sir.

साथियो, ऐसे और भी कितने युवा दोस्त हैं, कठिन परिस्थितियों में भी जिनके हौसलें की, जिनकी सफलता की कहानियाँ हमें प्रेरित करती हैं। मेरा मन था कि ज्यादा-से-ज्यादा युवा साथियों से बात करने का मौका मिले, लेकिन, समय की भी कुछ मर्यादाएं रहती हैं। मैं सभी युवा साथियों को यह आग्रह करूँगा कि वो अपनी कहानी, अपनी

जुबानी जो देश को प्रेरित कर सके, वो हम सब के साथ, जरूर साझा करें |

मेरे प्यारे देशवासियो, सात समुन्द्र पार, भारत से हजारों मील दूर एक छोटा सा देश है जिसका नाम है 'सूरीनाम'। भारत के 'सूरीनाम' के साथ बहुत ही करीबी सम्बन्ध हैं। सौ-साल से भी ज्यादा समय पहले, भारत से लोग वहाँ गए, और, उसे ही अपना घर बना लिया। आज, चौथी-पांचवी पीढ़ी वहाँ पर है। आज, सूरीनाम में एक चौथाई से अधिक लोग भारतीय मूल के हैं। क्या आप जानते हैं, वहाँ की आम भाषाओं में से एक 'सरनामी' भी, 'भोजपुरी' की ही एक बोली है। इन सांस्कृतिक संबंधों को लेकर हम भारतीय काफ़ी गर्व महसूस करते हैं।

हाल ही में, श्री चन्द्रिका प्रसाद संतोखी, 'सूरीनाम' के नये राष्ट्रपति बने हैं। वे, भारत के मित्र हैं, और, उन्होंने साल 2018 में आयोजित Person of Indian Origin (PIO) Parliamentary conference में भी हिस्सा लिया था। श्री चन्द्रिका प्रसाद संतोखी जी ने शपथ की शुरुआत वेद मन्त्रों के साथ की, वे संस्कृत में बोले। उन्होंने, वेदों का उल्लेख किया और "ॐ शांति: शांति: शांति:" के साथ अपनी शपथ पूर्ण करी। अपने हाथ में वेद लेकर वे बोले - मैं, चन्द्रिका प्रसाद संतोखी और, आगे, उन्होंने शपथ में क्या कहा? उन्होंने वेद का ही एक मंत्र का उच्चारण किया। उन्होंने कहा -

ॐ अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयम तन्मे राध्यताम।

इदमहमनृतात सत्यमुपैमि॥

यानी, हे अग्नि, संकल्प के देवता, मैं एक प्रतिज्ञा कर रहा हूँ। मुझे इसके लिए शक्ति और सामर्थ्य प्रदान करें। मुझे असत्य से दूर रहने और सत्य की ओर जाने का आशीर्वाद प्रदान करें। सच में, ये, हम सभी के लिए, गौरवान्वित होने वाली बात है।

मैं श्री चंद्रिका प्रसाद संतोखी को बधाई देता हूँ, और, अपने राष्ट्र की सेवा करने के लिए, 130 करोड़ भारतीयों की ओर से, उन्हें, शुभकामनायें देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, इस समय बारिश का मौसम भी है। पिछली बार भी मैंने आप से कहा था, कि, बरसात में गन्दगी और उनसे होने वाली बीमारी का खतरा बढ़ जाता है, अस्पतालों में भीड़ भी बढ़ जाती है, इसलिए, आप, साफ़-सफ़ाई पर बहुत ज्यादा ध्यान दें। Immunity बढ़ाने वाली चीजें, आयुर्वेदिक काढ़ा वगैरह लेते रहें। कोरोना संक्रमण के समय में, हम, अन्य बीमारियों से दूर रहें। हमें, अस्पताल के चक्कर न लगाने पड़ें, इसका पूरा ख्याल रखना होगा।

साथियो, बारिश के मौसम में, देश का एक बड़ा हिस्सा, बाढ़ से भी जूझ रहा है। बिहार, असम जैसे राज्यों के कई क्षेत्रों में तो बाढ़ ने काफ़ी मुश्किलें पैदा की हुई हैं, यानी, एक तरफ़ कोरोना है, तो दूसरी तरफ़ ये एक और चुनौती है, ऐसे में, सभी सरकारें, NDRF की टीमों, राज्य की आपदा नियंत्रण टीमों, स्वयं सेवी संस्थाएं, सब एक-साथ मिलकर, जुटे हुए हैं, हर तरह से, राहत और बचाव के काम कर रहे हैं। इस आपदा से प्रभावित सभी लोगों के साथ पूरा देश खड़ा है।

साथियो, अगली बार, जब हम, 'मन की बात' में मिलेंगे, उसके पहले ही, 15 अगस्त भी आने वाला है। इस बार 15 अगस्त भी, अलग परिस्थितियों में होगा - कोरोना महामारी की इस आपदा के बीच होगा।

मेरा, अपने युवाओं से, सभी देशवासियों से, अनुरोध है, कि, हम स्वतंत्रता दिवस पर, महामारी से आजादी का संकल्प लें, आत्मनिर्भर भारत का संकल्प लें, कुछ नया सीखने, और सिखाने का, संकल्प लें, अपने कर्तव्यों के पालन का संकल्प लें। हमारा देश आज जिस ऊँचाई पर है, वो, कई ऐसी महान विभूतियों की तपस्या की वजह से है, जिन्होंने, राष्ट्र निर्माण के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया, उन्हीं महान विभूतियों में से एक हैं 'लोकमान्य तिलक'। 1 अगस्त 2020 को लोकमान्य तिलक जी की 100वीं पुण्यतिथि है। लोकमान्य तिलक जी का जीवन हम सभी के लिए बहुत बड़ी प्रेरणा है। हम सभी को बहुत कुछ सिखाता है।

अगली बार जब हम मिलेंगे, तो, फिर ढेर सारी बातें करेंगे, मिलकर कुछ नया सीखेंगे, और सबके साथ साझा करेंगे। आप सब, अपना ख्याल रखिये, अपने परिवार का ख्याल रखिये, और स्वस्थ रहिए। सभी देशवासियों को आने वाले सभी पर्वों की बहुत-बहुत शुभकामनायें। बहुत-बहुत धन्यवाद।

VRRK/KP

(रिलीज़ आईडी: 1641317) आगंतुक पटल : 721

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: Punjabi , Telugu , Urdu , Assamese , Manipuri , English , Marathi , Bengali , Gujarati , Odia , Tamil , Kannada , Malayalam

प्रधानमंत्री कार्यालय

रक्षा निर्माण में आत्मनिर्भर भारत सेमिनार पर प्रधानमंत्री के सम्बोधन का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 27 AUG 2020 7:06PM by PIB Delhi

मंत्रिमंडल में मेरे सहयोगी श्रीमान राजनाथ जी, Chief of Defence Staff जनरल बिपिन रावत जी, सेना के तीनों अंगों के प्रमुख, भारत सरकार के सभी उपस्थित उच्चाधिकारी, उद्योग जगत के सभी साथी, नमस्कार।

मुझे खुशी है कि भारत में रक्षा उत्पादन से जुड़े हुए सभी अहम stakeholders आज यहां मौजूद हैं। इस सेमिनार के आयोजन के लिए रक्षामंत्री राजनाथ जी और उनकी पूरी टीम को मैं बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। आज यहां हो रहे इस मंथन से जो परिणाम मिलेंगे, उनसे रक्षा उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के हमारे प्रयासों को अवश्य बल मिलेगा, गति मिलेगी और आप सबने जो सुझाव दिए हैं, आज आपने एक सामूहिक मंथन किया है, वो अपने-आप में आने वाले दिनों के लिए बहुत उपकारक होगा।

मुझे इस बात की भी खुशी है कि रक्षामंत्री श्री राजनाथ जी इस काम के लिए mission mode में पूरी तरह से जुटे हुए हैं। मुझे विश्वास है कि उनके इन अथक प्रयासों के कारण बहुत ही अच्छे परिणाम मिलना निश्चित है।

साथियों, ये किसी से छिपा नहीं है कि भारत कई सालों से दुनिया के सबसे बड़े Defence Importers में एक प्रमुख देश रहा है। जब भारत आजाद हुआ था तो उस समय रक्षा उत्पादन के लिए भारत में बहुत सामर्थ्य था। उस समय भारत में 100 साल से अधिक समय से स्थापित रक्षा उत्पादन का Ecosystem था। और भारत जैसा सामर्थ्य और potential बहुत कम देशों के पास था। लेकिन भारत का दुर्भाग्य रहा कि दशकों तक इस विषय पर उतना ध्यान नहीं दिया गया जितना देना चाहिए था। एक प्रकार से ये routine exercise बन गया, कोई गंभीर प्रयास नहीं किए गए थे। और हमारे बाद में शुरुआत करने वाले अनेक देश भी पिछले 50 साल में हमसे बहुत आगे निकल गए। लेकिन अब स्थिति बदल रही है।

पिछले कुछ वर्षों में आपने अनुभव किया होगा कि हमारा प्रयास इस सेक्टर से जुड़ी सभी बेड़ियां तोड़ने का एक निरंतर प्रयास है। हमारा उद्देश्य है कि भारत में manufacturing बढ़े, नई technologies का भारत में ही विकास हो और प्राइवेट सेक्टर का इस विशेष क्षेत्र में अधिकतम विस्तार हो। और इसके लिए लाइसेंसिंग प्रक्रिया में सुधार, level playing field की तैयारी, export की प्रक्रिया का सरलीकरण, offset के प्रावधानों में सुधार; ऐसे अनेक कदम उठाए गए हैं।

साथियों, मेरा मानना है कि इन कदमों से भी अधिक महत्वपूर्ण है रक्षा क्षेत्र में देश में एक नई मानसिकता हम सब अनुभव कर रहे हैं, एक नई मानसिकता का जन्म हुआ है। आधुनिक और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए रक्षा क्षेत्र में आत्मविश्वास की भावना अनिवार्य है। बहुत लंबे समय से देश में Chief of Defence Staff की नियुक्ति पर विचार किया जा रहा था, लेकिन निर्णय नहीं हो पा रहा था। ये निर्णय नए भारत के आत्मविश्वास का प्रतीक है।

बहुत लंबे समय तक रक्षा उत्पादन में विदेशी निवेश की अनुमति नहीं थी। श्रद्धेय अटल जी की सरकार के समय ये नई पहल की शुरुआत हुई थी। हमारी सरकार आने के बाद इसमें और सुधार किए गए और अब पहली बार इस सेक्टर में 74 पर्सेंट तक एफडीआई ऑटोमेटिक रूप से आने का रास्ता खोला जा रहा है। ये नए भारत के आत्मविश्वास का परिणाम है।

दशकों से Ordnance कारखानों को सरकारी विभागों की तरह ही चलाया जा रहा था। एक सीमित vision के कारण देश का नुकसान तो हुआ ही, वहां जो काम करने वाले लोग थे, जिनके पास talent थे, commitment था, मेहनती थे, ये हमारा बहुत ही अनुभव से संपन्न हमारा जो मेहनत करने वाला श्रमिक वर्ग वहां जो है, उनका तो बहुत नुकसान हुआ।

जिस सेक्टर में करोड़ों लोगों के रोजगार के अवसर बन सकते थे, उसका ecosystem बहुत ही सीमित रहा। अब Ordnance कारखानों का corporatization करने की दिशा में हम आगे बढ़ रहे हैं। इस प्रक्रिया के पूरा होने पर श्रमिकों और सेना, दोनों को बल मिलेगा। यह नए भारत के आत्मविश्वास का प्रमाण है।

साथियों, रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता को लेकर हमारा commitment सिर्फ बातचीत में या फिर कागजों तक ही सीमित नहीं है। इसके कार्यान्वयन के लिए एक के बाद एक ठोस कदम उठाए गए हैं। CDS के गठन के बाद सेना के तीनों अंगों में procurements पर समन्वय बहुत बेहतर हुआ है, इससे defence equipments की खरीद को scale up करने में मदद मिल रही है। आने वाले दिनों में domestic industry के लिए orders का साइज भी बढ़ने वाला है। ये सुनिश्चित करने के लिए रक्षा मंत्रालय के कैपिटल बजट का एक हिस्सा अब भारत में बने उपकरणों के लिए अलग से रख दिया गया है।

हाल में आपने देखा होगा कि 101 defence items को पूरी तरह से घरेलू खरीद के लिए सुरक्षित कर दिया गया है। आने वाले दिनों में इस लिस्ट को और व्यापक बनाया जाएगा इसमें और items जुड़ते रहेंगे। इस लिस्ट का उद्देश्य आयात को रोकना मात्र नहीं है, बल्कि भारत में उद्योगों को प्रोत्साहित करने के लिए ये कदम उठाया गया है। इससे आप सभी साथियों को, चाहे वो प्राइवेट सेक्टर हो, पब्लिक सेक्टर हो, MSME हों, स्टार्टअप हो, सभी के लिए ये सरकार की भावना और भविष्य की संभावना अब आपके सामने black and white में क्लियर है।

इसके साथ हम procurement प्रक्रिया को speed up करने के लिए, testing की व्यवस्था को streamline करने के लिए और क्वालिटी की requirements को rationalize करने के लिए भी लगातार काम कर रहे हैं। और मुझे खुशी है कि इन सभी प्रयासों को सेना के तीनों अंगों का बहुत ही coordinated रूप में, बहुत ही सहयोग है, एक प्रकार से pro-active भूमिका है।

साथियों, आधुनिक उपकरणों में आत्मनिर्भरता के लिए technology up-gradation जरूरी है। जो उपकरण आज बन रहे हैं उनका next generation तैयार करने पर काम करना भी आवश्यक है। और इसके लिए DRDO के अलावा प्राइवेट सेक्टर में और academic institutions में भी research और innovation को प्रोत्साहित किया जा रहा है। Technology transfer की सुविधा से हटकर Foreign partners के साथ Joint ventures के माध्यम से Co-production के मॉडल पर बल दिया जा रहा है। भारत के मार्केट साइज को देखते हुए हमारे Foreign partners के लिए अब भारत में ही production करना सबसे उत्तम विकल्प है।

साथियों, हमारी सरकार ने शुरू से ही Reform, Perform & Transform, इस मंत्र को ले करके हमने काम किया है। Red tapism कम करना और Red Carpet बिछाना, यही हमारा प्रयास रहा है। Ease of doing business को लेकर 2014 से अब तक जो सुधार किए गए हैं, उनका परिणाम पूरे विश्व ने

देखा है। Intellectual property, taxation, insolvency and Bankruptcy, यहां तक कि Space और Atomic energy जैसे बहुत कठिन और जटिल, ऐसे जो विषय माने जाते हैं, उन विषयों पर भी हमने reforms करके दिखाए हैं। और आप तो अब भलीभांति जानते हैं पिछले दिनों labour laws में reforms का सिलसिला भी लगातार जो शुरू हुआ है, चल रहा है।

कुछ साल पहले तक इस प्रकार के विषयों पर सोचा भी नहीं जाता था। और आज ये reforms जमीन पर उतर चुके हैं। Reforms का ये सिलसिला थमने वाला नहीं है, हम आगे बढ़ते ही जाने वाले हैं। इसलिए न थमना भी है और न थकना भी है; न मुझे थकना है न आपको थकना है। हमें आगे भी आगे बढ़ते रहना है और हमारी तरफ से मैं आपको बताता हूं ये हमारा commitment है।

साथियों, जहां तक infrastructure की बात है, जो defence corridors पर तेजी से काम चल रहा है, उत्तर प्रदेश और तमिलनाडु की सरकारों के साथ मिलकर state of the art infrastructure तैयार किया जा रहा है। इसके लिए आने वाले पांच सालों में 20 हजार करोड़ रुपये के निवेश का लक्ष्य रखा गया है। MSME और Start-ups से जुड़े Entrepreneurs को प्रोत्साहित करने के लिए IDEX की जो पहल की गई थी, उसके भी अच्छे परिणाम मिल रहे हैं। इस प्लेटफॉर्म के माध्यम से 50 से अधिक startups ने सैन्य उपयोग के लिए technology और products को विकसित किया है।

साथियों, मैं एक और बात आपके सामने खुले मन से रखना चाहता हूं। आत्मनिर्भर भारत का हमारा संकल्प inward looking नहीं है। Global economy को ज्यादा resilient, ज्यादा stable बनाने के लिए, विश्व में शांति के लिए एक सक्षम भारत का निर्माण ही इसका लक्ष्य है। यही भावना Defence manufacturing में आत्मनिर्भरता के लिए भी है। भारत में अपने कई मित्र देशों के लिए रक्षा उपकरण का एक भरोसेमंद सप्लायर बनने की क्षमता है। इससे भारत की strategic partnership को और बल मिलेगा और हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की net security provider की भूमिका और सुदृढ़ होगी।

साथियों, सरकार के प्रयास और प्रतिबद्धता आप सभी के सामने हैं। अब आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को हमें मिल करके इसे सिद्ध करना है। चाहे प्राइवेट सेक्टर हो या पब्लिक सेक्टर हो, या फिर हमारे foreign partners, आत्मनिर्भर भारत सभी के लिए Win-Win संकल्प है। इसके लिए आपको एक बेहतर ecosystem देने के लिए हमारी सरकार प्रतिबद्ध है।

यहां आपकी तरफ से जो भी सुझाव आए हैं वे बहुत ही उपयोगी सिद्ध होने वाले हैं। और मुझे बताया गया है कि Defence production and export promotion policy का draft सभी stakeholders के साथ साझा किया गया है। आपके feedback से इस पॉलिसी को जल्द से जल्द लागू करने में मदद मिलेगी। यह भी जरूरी है कि आज का ये सेमिनार एक one time event न रहे बल्कि आगे भी ऐसे आयोजन होते रहें। इंडस्ट्री और सरकार के बीच लगातार विचार-विमर्श और feedback की स्वाभाविक culture बननी चाहिए।

मुझे विश्वास है कि ऐसे सामूहिक प्रयासों से हमारे संकल्प सिद्ध होंगे। मैं फिर एक बार, आप सबने समय निकाला, आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए आत्मविश्वास के साथ आप जुटे, मुझे विश्वास है कि आज जो संकल्प हम ले रहे हैं, इसको पूर्ण करने में हम सब ने अपनी जिम्मेदारी बहुत खूब अच्छे ढंग से निभाएंगे।

मैं फिर एक बार आप सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं।

बहुत-बहुत धन्यवाद

VRRK/KP/BM/NS

(रिलीज़ आईडी: 1649012) आगंतुक पटल : 258

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English , Urdu , Marathi , Manipuri , Bengali , Assamese , Punjabi , Gujarati , Odia , Tamil , Telugu , Kannada , Malayalam

प्रधानमंत्री कार्यालय

जैसलमेर के लोंगेवाला में भारतीय सशस्त्र बलों के सैनिकों के साथ दिवाली उत्सव पर प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 14 NOV 2020 4:14PM by PIB Delhi

माँ भारती की सेवा और सुरक्षा के लिए चौबीसों घंटे डटे रहने वाले आप सभी वीरों को फिर एक बार मेरी तरफ से 130 करोड़ देशवासियों की तरफ से दीपावली की बहुत-बहुत बधाई। देश की सरहद पर हों, आसमान में या समुद्र के विस्तार में, बर्फीली चोटियों पर हों या घने जंगलों में, राष्ट्र रक्षा से जुड़े हर वीर बेटे-बेटी, हमारी सेनाएं, बीएसएफ, आईटीबीपी, सीआईएसएफ, हर सुरक्षा बल, हमारे पुलिस के जवान, हर किसी को मैं आज दीपावली के इस पावन पर्व पर आदरपूर्वक नमन करता हूँ।

आप हैं, तो देश हैं, देश के लोगों की खुशियां हैं, देश के ये त्योहार हैं। मैं आज आपके बीच प्रत्येक भारतवासी की शुभकामनाएं लेकर के आया हूँ। आप के लिए कोटि-कोटि देशवासियों का प्यार लेकर के आया हूँ। हर वरिष्ठ जन का मैं आपके लिए आशीष लेकर के आया हूँ। मैं आज उन वीर माताओं-बहनों और बच्चों को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ, उनके त्याग को नमन करता हूँ जिनके अपने बेटे हो या बेटी, आज त्योहार के दिन पर भी सरहद पर तैनात हैं उनके परिवार के सभी लोग भी अभिनंदन के अधिकारी हैं। एक बार फिर दोनों मुट्ठी बंद करके पूरी ताकत से मेरे साथ बोलिये भारत माता की जय, भारत माता की जय, भारत माता की जय।

साथियों मुझे याद है प्रधानमंत्री बनने के बाद पहली बार 2014 में दीपावली के पर्व पर मैं सियाचिन चला गया था। जवानों के साथ दिवाली मनाने के लिए, तो बहुत लोगों को थोड़ा आश्चर्य हुआ। त्योहार के दिन ये क्या प्रधानमंत्री कर रहा है। लेकिन, अब तो आप भी मेरे भाव जानते हैं। अगर दिवाली के पर्व पर अपनों के बीच ही तो जाऊंगा, अपने से दूर कहां रहूंगा। और इसलिए आज भी दीपावली के वर्ष आप लोगों के बीच आया हूँ। अपनों के बीच मैं आया हूँ। आप भले बर्फीली पहाड़ियों पर रहें, या फिर रेगिस्तान में, मेरी दिवाली तो आपके बीच आकर ही पूरी होती है। आपके चेहरों की रौनक देखता हूँ। आपके चेहरों की खुशियां देखता हूँ। तो मुझे भी अनेक गुणा खुशी हो जाती है। मेरी खुशी बढ़ जाती है। इसी खुशी के लिए, देशवासियों के उल्लास को आप तक पहुंचाने के लिए आज मैं फिर एक बार, इस रेगिस्तान में आपके बीच मैं आया हूँ। और एक बात, आपके लिए त्योहार का दिन है तो मैं इसीलिए थोड़ी सी मिठाई भी लेके आया हूँ। लेकिन ये सिर्फ देश का प्रधानमंत्री मिठाई लेकर नहीं आया है। ये मेरी ही नहीं ये सभी देशवासियों के प्रेम और अपनेपन का स्वाद भी उसके साथ लेके आया हूँ। इन मिठाइयों में आप देश की हर मां के हाथ की मिठास अनुभव कर सकते हैं। इस मिठाई में आप हर भाई, बहन और पिता के आशीर्वाद को महसूस कर सकते हैं। और इसलिए, मैं आपके बीच अकेला नहीं आता। मैं अपने साथ देश का आप के प्रति प्रेम, आपके प्रति स्नेह और आपके लिए आशीर्वाद भी साथ लेकर आता हूँ और साथियों,

आज यहां लोंगेवाला की इस पोस्ट पर हूँ, तो देश भर की नजरें आप पर हैं, मां भारती के लाडलों, मेरी इन बेटियों, मेरे देश को गौरव देने वाली ये बेटियाँ जो मेरे सामने बैठी हैं, उन पर देश की नजर है। मुझे लगता है कि देश की सरहद पर अगर किसी एक पोस्ट का नाम देश के सबसे ज्यादा लोगों को याद होगा, अनेक पीढ़ियों को याद होगा, तो उस पोस्ट का नाम है लोंगेवाला पोस्ट, हर किसी की जुबान पर

है। एक ऐसी पोस्ट, जहां गर्मियों में तापमान 50 डिग्री को छूता है तो सर्दियों में शून्य से नीचे चला जाता है और मई-जून में ये बालू जिस प्रकार से आती है एक दूसरे का चेहरा भी नहीं देख पाते हैं। इस पोस्ट पर आपके साथियों ने शौर्य की एक ऐसी गाथा लिख दी है, जो आज भी हर भारतीय के दिल को जोश से भर देती है। लोंगेवाला का नाम लेते ही हृदय की गहराई से मन मंदिर से यही प्रकट होता है 'जो बोले सो निहाल, सत श्री अकाल' ये जयकारा कानों में गूंजने लगता है।

साथियों,

जब भी सैन्य कुशलता के इतिहास के बारे में लिखा-पढ़ा जाएगा, जब सैन्य पराक्रम की चर्चा होगी, तो बैटल ऑफ लोंगेवाला को जरूर याद किया जाएगा। ये वो समय था जब पाकिस्तान की सेना बांग्लादेश के निर्दोष नागरिकों पर अत्याचार कर रही थी, जुल्म कर रही थी, नरसंहार कर रही थी। बहन-बेटियों पर अमानवीय जुल्म कर रही थी, पाकिस्तान की सेना के लोग कर रहे थे। इन हरकतों से पाकिस्तान का घृणित चेहरा उजागर हो रहा था। भयंकर रूप दुनिया के सामने पाकिस्तान का प्रकट हो रहा था। इन सबसे दुनिया का ध्यान हटाने के लिए पाकिस्तान ने हमारे देश की पश्चिमी सीमाओं पर मोर्चा खोल दिया। पाकिस्तान को लगता था कि भारत की पश्चिम सीमा पर मोर्चा खोल दूंगा, दुनिया में भारत ने ये कर दिया, भारत ने वो कर दिया करके रोता रहूंगा और बांग्लादेश के सारे पाप उनके छिप जाएंगे। लेकिन हमारे सैनिकों ने जो मुंहतोड़ जवाब दिया, पाकिस्तान को लेने के देने पड़ गए।

साथियों,

यहां इस पोस्ट पर दिखाए गए पराक्रम की गूंज, इस गूंज ने दुश्मन का हौसला तोड़ दिया था। उसको क्या पता था कि यहां उसका सामना मां भारती के शक्तिशाली बेटे-बेटियों से होने वाला है। मेजर कुलदीप सिंह चांदपुरी के नेतृत्व में भारतीय वीरों ने टैंकों से लैस दुश्मन के सैनिकों को धूल चटा दी, उनके मंसूबों को नेस्तनाबूत कर दिया। कभी-कभी मुझे लगता है कि कुलदीप जी के माता-पिता ने उनका नाम कुलदीप भले रखा था, उनको लगा होगा कि ये कुल का दीपक है लेकिन वो कुलदीप जी ने अपने पराक्रम से उस नाम को ऐसे सार्थक कर दिया, ऐसे सार्थक कर दिया कि वे सिर्फ कुलदीप नहीं, वे राष्ट्रदीप बन गए।

साथियों,

लोंगेवाला का वो ऐतिहासिक युद्ध भारतीय सैन्यबल के शौर्य का प्रतीक तो है ही, थलसेना, बीएसएफ और वायुसेना के अद्भुत Coordination का भी प्रतीक है। इस लड़ाई ने दिखाया है कि भारत की संगठित सैन्य शक्ति के सामने चाहे कोई भी आ जाए, वो किसी भी सूरत में टिक नहीं पाएगा। अब जब सन 71 में हुए युद्ध के, लोंगेवाला में हुई लड़ाई के 50 वर्ष होने जा रहे हैं, कुछ ही सप्ताह में हम इसके 50 वर्ष, इस गौरवपूर्ण स्वर्णिम पृष्ठ को हम मनाने वाले हैं और इसीलिए आज मेरा मन यहां आने को कर गया है। तो पूरा देश अपने उन वीरों की विजय गाथाएं सुनकर वो गौरवान्वित होगा, उसका हौसला बुलंद होगा, नई पीढ़ियां और आने वाली पीढ़ियां, इस पराक्रम के साथ प्रेरणा भी लेने के लिए ये अवसर उनके जीवन का एक बड़ा महत्वपूर्ण बनने वाला है। ऐसे ही वीर सपूतों के लिए राजस्थान की भूमि के ही एक कवि नारायण सिंह भाटी ने लिखा है और यही गीत बोलचाल की भाषा में लिखा है, उन्होंने लिखा है इन जैसे घर, इन जैसे गगन, इन जैसे सह-इतिहास! इन जैसी सह-पीढ़ियां, प्राची त्रणे प्रकाश!! यानि अपने वीर सपूतों के बलिदानों पर ये धरती गर्व करती है, आसमान गर्व करता है और सम्पूर्ण इतिहास गर्व करता है। जब-जब सूर्य का प्रकाश इस धरती पर अंधकार को भगाने के लिए अवतरित होगा, आने वाली पीढ़ियां इस बलिदान पर गर्व करती रहेंगी।

साथियों,

हिमालय की बुलंदियां हों, रेगिस्तान में बालू के ढेर हो, घने जंगल हों या फिर समंदर की गहराई हो, हर चुनौती पर हमेशा आपकी वीरता हर चुनौती पर भारी पड़ी है। आप में से अनेक साथी अगर आज यहां रेगिस्तान में डटे हैं, तो आपको हिमालय की ऊंचाइयों का भी अनुभव है। स्थिति-परिस्थिति कोई भी हो, आपका पराक्रम, आपका शौर्य, अतुलनीय है। इसी का असर है कि आज दुश्मन को भी ये एहसास है कि भारत के जांबाजों की कोई बराबरी नहीं है। आपके इसी शौर्य को नमन करते हुए आज भारत के 130 करोड़ देशवासी आपके साथ मजबूती से खड़े हैं। आज हर भारतवासी को अपने सैनिकों की ताकत और शौर्य पर गर्व है। उन्हें आपकी अजेयता पर, आपके अपराजेयता पर गर्व है। दुनिया की कोई भी ताकत हमारे वीर जवानों को देश की सीमा की सुरक्षा करने से न रोक सकता है न टोक भी सकता है।

साथियों,

दुनिया का इतिहास हमें ये बताता है कि केवल वही राष्ट्र सुरक्षित रहे हैं, वही राष्ट्र आगे बढ़े हैं जिनके भीतर आक्रांताओं का मुकाबला करने की क्षमता थी। अगर आज का दृश्य देखें, भले ही international cooperation कितना ही आगे क्यों न आ गया हो, समीकरण कितने ही बदल क्यों न गए हों, लेकिन हम कभी नहीं भूल सकते कि, सतर्कता ही सुरक्षा की राह है, सजगता ही सुख-चैन का संबल है। सामर्थ्य ही विजय का विश्वास है, सक्षमता से ही शांति का पुरस्कार है। भारत आज सुरक्षित है क्योंकि भारत के पास अपनी सुरक्षा करने की शक्ति है, भारत के पास आप जैसे वीर बेटे-बेटियां हैं।

साथियों,

जब भी जरूरत पड़ी है, भारत ने दुनिया को दिखाया है कि उसके पास ताकत भी है और सही जवाब देने की राजनीतिक इच्छाशक्ति भी है। हमारी सैन्य ताकत, उसने आज हमारी negotiating power को भी अनेक गुना बढ़ा दिया है, उनके पराक्रम से बढ़ा है, उनकी संकल्प शक्ति से बढ़ा है। आज भारत आतंकियों को, आतंक के आकाओं को घर में घुसकर मारता है। आज दुनिया ये जान रही है, समझ रही है कि ये देश अपने हितों से किसी भी कीमत पर रती भर भी समझौता करने वाला नहीं है। भारत का ये रुतबा, ये कद आपकी शक्ति और आपके पराक्रम के ही कारण है। आपने देश को सुरक्षित किया हुआ है इसीलिए आज भारत वैश्विक मंचों पर प्रखरता के साथ अपनी बात रखता है।

साथियों,

आज पूरा विश्व विस्तारवादी ताकतों से परेशान हैं। विस्तारवाद, एक तरह से मानसिक विकृति है और अठ्ठारहवीं शताब्दी की सोच को दर्शाता है। इस सोच के खिलाफ भी भारत प्रखर आवाज बन रहा है।

साथियों,

आज भारत बहुत तेजी के साथ अपने डिफेंस सेक्टर को आत्मनिर्भर बनाने की तरफ बहुत तेजी से कदम उठा रहा है, आगे बढ़ रहा है। हाल ही में हमारी सेनाओं ने निर्णय लिया है कि वो 100 से ज्यादा अलग-अलग प्रकार की जो आवश्यकताएं, खासकर हथियार और साजो-सामान उसको अब विदेशों से नहीं लेंगे, भारत में उत्पाद की हुई चीज़ें ही लेंगे। यहीं का उत्पाद और उसके लिए जो आवश्यक होगा करेंगे। ये निर्णय छोटा नहीं है। इसके लिए सीने में बहुत बड़ा दम लगता है। अपने जवानों पर विश्वास लगता है। मैं आज इस मौके पर और त्याग और तपस्या की इस महत्वपूर्ण भूमि से, मैं अपनी सेनाओं को उनके इस महत्वपूर्ण फैसले के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूं। ये निर्णय छोटा नहीं है, मैं जानता हूं। फैसला सेना ने लिया, आत्मनिर्भर भारत का एक बहुत बड़ा हौसला बढ़ाने वाला निर्णय लिया। लेकिन सेना के इस फैसले से देशवासियों में भी, 130 करोड़ देशवासियों में ऐसा मैसेज चला गया, सब दूर चला गया और वो मैसेज क्या गया लोकल के लिए वोकल होने का, सेना के एक निर्णय ने 130 करोड़ देशवासियों को लोकल के लिए वोकल होने की प्रेरणा दी। मैं आज देश के नौजवानों से, देश की सेनाओं

से, सुरक्षा बलों से, पैरामेडिकल फोर्स से, एक के बाद एक इस प्रकार निर्णयों के अनुकूल भारत में भी मेरे देश के युवा ऐसी-ऐसी चीजों का निर्माण करेंगे, ऐसी-ऐसी चीजें बनाकर के लायेंगे, हमारी सेना के जवानों की, हमारे सुरक्षा बलों के जवानों की ताकत बढ़ेगी। हाल के दिनों में अनेक स्टार्ट-अप्स सेनाओं की जरूरतों को पूरा करने के लिए आगे आए हैं। डिफेंस सेक्टर में नौजवानों के नए स्टार्ट-अप्स देश को आत्मनिर्भरता के मामले में और तेजी से आगे ले जाएंगे।

साथियों,

रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर भारत, देश के बढ़ते हुए इस सामर्थ्य का लक्ष्य है- सरहद पर शांति। आज भारत की रणनीति साफ है, भारत की रणनीति स्पष्ट है। आज का भारत समझने और समझाने की नीति पर विश्वास करता है, समझने की भी और समझाने की भी, लेकिन अगर हमें आजमाने की कोशिश की, फिर तो जवाब भी उतना ही प्रचंड मिलेगा।

साथियों,

देश की अखंडता, देशवासियों की एकता पर निर्भर करती है। शान्ति, एकता, सद्भावना देश के भीतर देश की अखण्डता को ऊर्जा देती है। सीमा की सुरक्षा, सुरक्षाबलों की शक्ति के साथ जुड़ी है। सीमा पर हमारे जांबाजों का हौसला बुलंद रहे, उनका मनोबल आसमान से भी ऊंचा रहे, इसलिए उनकी हर आवश्यकता, हर जरूरत, आज देश की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में है। उनके परिवार की देखभाल, ये देश का दायित्व है। बीते समय में, सैनिकों के बच्चों की शिक्षा और रोजगार को लेकर भी अनेक फैसले लिए गए हैं। पिछले वर्ष जब मैंने दूसरी बार शपथ ली थी तो पहला फैसला ही शहीदों के बच्चों की शिक्षा से जुड़ा हुआ था। इसके तहत नेशनल डिफेंस फंड के अंतर्गत मिलने वाली स्कॉलरशिप को बढ़ाया गया है।

साथियों,

सुविधा के साथ-साथ वीरों के सम्मान के लिए भी देश में अभूतपूर्व प्रयास चल रहे हैं। National war memorial, राष्ट्रीय समर स्मारक या फिर नेशनल पुलिस मेमोरियल हो, ये दोनों स्मारक देश के शौर्य के सर्वोच्च प्रतीक बनकर देशवासियों को, हमारी नई पीढ़ी को प्रेरित कर रहे हैं।

साथियों,

मुश्किल चुनौतियों के बीच आपका व्यवहार, आपका टीम वर्क, देश को हर मोर्चे पर इसी जज्बे के साथ लड़ने की सीख देता है। आज देश इसी भावना से कोरोना जैसी महामारी के खिलाफ भी जंग लड़ रहा है। देश के हजारों doctors, nurses, helpers और support staff दिन रात, बिना रुके, बिना थके काम कर रहे हैं। देशवासी भी इस जंग को फ्रंटलाइन warriors की तरह लड़ रहे हैं। इतने महीनों से हमारे देशवासी पूरे अनुशासन का पालन कर रहे हैं, मास्क जैसी सावधानियों का पालन कर रहे हैं और अपने और अपनों के जीवन की भी रक्षा कर रहे हैं। लेकिन हमें ये भी एहसास है, कि अगर हमें मास्क पहनने में ही इतनी तकलीफ होती है तो आपके लिए ये सुरक्षा जैकेट्स, न जाने आपके शरीर पर कितनी चीजें आपको लादनी पड़ती है। इतना कुछ पहनना कितना कठिन होता होगा। आपके इस त्याग से देश अनुशासन भी सीख रहा है और सेवा धर्म का भी पालन भी कर रहा है।

साथियों,

सीमा पर रहकर आप जो त्याग करते हैं, तपस्या करते हैं, वो देश में एक विश्वास का वातावरण बनाता है, हर हिन्दुस्तानी के अंदर एक नया confidence level लाता है। ये विश्वास होता है कि मिलकर बड़ी से बड़ी चुनौती का मुकाबला किया जा सकता है। आपसे मिली इसी प्रेरणा से देश महामारी के इस कठिन समय में अपने हर नागरिक के जीवन की रक्षा में जुटा हुआ है। इतने महीनों से देश अपने 80 करोड़ से

ज्यादा नागरिकों के भोजन की व्यवस्था कर रहा है। लेकिन इसके साथ ही, देश, अर्थव्यवस्था को फिर से एक बार गति देने का भी पूरे हौसले से प्रयास कर रहा है। देशवासियों के इसी हौसले का परिणाम है कि आज कई sectors में फिर से रिकॉर्ड रिकवरी और growth दिख रही है। ये अलग-अलग प्रकार की सब लड़ाइयां, ये सब सफलताएं, इनका श्रेय सीमा पर डटे हमारे जवानों को जाता है, आपको जाता है।

साथियों,

हर बार, हर त्योहार में, जब भी मैं आपके बीच आता हूं, जितना समय आप सब के बीच बिताता हूं, जितना आपके सुख-दुख में शामिल होता हूं, राष्ट्ररक्षा का, राष्ट्रसेवा का मेरा संकल्प उतना ही मज़बूत होता है। मैं आपको फिर आश्वस्त करता हूं कि आप निश्चित होकर अपने कर्तव्य पथ पर डटे रहें, प्रत्येक देशवासी आपके साथ है। हां, आज के दिन मैं आपसे एक मित्र के रूप में, एक साथी के रूप में तीन बातों का आग्रह करूंगा और मुझे विश्वास है कि मेरा ये आग्रह आपके लिए भी हो सकता है संकल्प बन जाए। पहला- कुछ न कुछ नया Innovate करने की आदत को, नई तरीके से करने की आदत, नई चीज खोजकर करने की आदत, इसको जिंदगी का हिस्सा बनाइए और मैंने देखा है कि इस प्रकार जिन्दगी गुजारने वाले हमारे जवानों की creativity देश के लिए बहुत कुछ नई चीजें ला सकती हैं। आप थोड़ा सा ध्यान दीजिए, कुछ न कुछ इनोवेट करने पर। देखिए, हमारे सुरक्षा बलों को क्योंकि आप अनुभव के आधार पर इनोवेट करते हैं। रोजमर्रा से जिस प्रकार से आप जूझते हैं उसमें से निकालते हैं, बहुत बड़ा लाभ होता है। दूसरा मेरा आग्रह है और वो आप लोगों के लिए बहुत जरूरी है आप हर हालत में योग को अपने जीवन का हिस्सा बनाए रखिए और तीसरा हम सबकी अपनी-अपनी मातृभाषा है, हम में से बहुत लोग हिन्दी बोलते भी हैं, हम में से कुछ लोग अंग्रेजी भी बोलते हैं, इन सबसे तो हमारा स्वाभाविक नाता रहता है। लेकिन जब ऐसा सामूहिक जीवन होता है, एक मेरे सामने लघु भारत बैठा हुआ है। देश के हर कोने के नौजवान बैठे हुए हैं। अलग-अलग मातृभाषा के नौजवान बैठे हुए हैं तब मैं आपसे एक और आग्रह करता हूं कि मातृभाषा वो जानते हैं आप, हिन्दी जानते हैं, अंग्रेजी जानते हैं, क्यों न अपने किसी एक साथी के पास से, भारत की कोई एक और भाषा आप जरूर आत्मसात कीजिए। सीखिए, आप देखना वो आपकी एक बहुत बड़ी ताकत बन जाएगी। आप जरूर देखेंगे, ये बातें आपमें एक नई ऊर्जा का संचार करेंगी।

साथियों,

जब तक आप हैं, आपका ये हौसला है, आपके ये त्याग और तपस्या है, 130 करोड़ भारतवासियों का आत्मविश्वास कोई नहीं डिगा पाएगा। जब तक आप हैं, तब तक देश की दिवाली इसी तरह रोशन होती रहेगी। लोंगेवाला की इस पराक्रमी भूमि से, वीरता और साहस की भूमि से, त्याग और तपस्या की भूमि से मैं फिर एक बार, आप सबको भी और देशवासियों को भी दीपावली की अनेक-अनेक शुभकामनाएं देता हूं। मेरे साथ, पूरी ताकत के साथ दोनों मुट्ठी ऊपर करके पूरी ताकत से बोलिए, भारत माता की जय! भारत माता की जय! भारत माता की जय!

बहुत-बहुत धन्यवाद!

डीएस/एमजी/एम/एसके

(रिलीज़ आईडी: 1672936) आगंतुक पटल : 342

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: Manipuri , English , Urdu , Marathi , Assamese , Bengali , Punjabi , Gujarati , Odia , Tamil , Telugu , Kannada , Malayalam

प्रधानमंत्री कार्यालय

जैसलमेर में प्रधानमंत्री द्वारा वायु सेना कर्मियों को संबोधन का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 14 NOV 2020 7:30PM by PIB Delhi

साथियों,

जैसलमेर एयरबेस पर मुझे कई बार आने का अवसर तो आया है लेकिन कार्यक्रमों की श्रृंखला ऐसी रहती है कि न कभी रुकने का, कभी किसी से बात करने का अवसर रहता है लेकिन आज मेरा सौभाग्य है कि मुझे एक्सकलूसिवली आप सबके बीच समय और दीपावली का पर्व बनाने का अवसर मिला है। आपको, आपके परिवार के हर सदस्य को दीपावली की बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

साथियों,

दीपावली के दिन दरवाजे या गेट के सामने शुभ-लाभ या तो रिद्धि-सिद्धि ऐसी रंगोली की परंपरा रही है। इसके पीछे सोच यही होती है कि दीपावली पर हमारे यहां समृद्धि आए। अब जिस तरह घरों में दरवाजे होते हैं वैसे ही तो राष्ट्र की हमारी सीमाएं हमारे राष्ट्र का एक प्रकार से द्वार होता है। ऐसे में राष्ट्र की समृद्धि आपसे है, राष्ट्र का शुभ-लाभ आप से है, राष्ट्र की रिद्धि-सिद्धि आप से है और आपके पराक्रम से है। इसलिए ही आज देश के हर घर में आप सभी का गौरवगान करते हुए आपके लिए दीया जलाकर लोग अपनी भावनाएं प्रकट कर रहे हैं। दीपावली के ये दीये आपके पराक्रम की रोशनी में जगमग हो रहे हैं। दीपावली के ये दीये आपके सम्मान में हिन्दुस्तान के हर कोने में, हर परिवार में प्रज्ज्वलित हो रहे हैं। मैं इन भावनाओं के साथ ही आज आपके बीच हूँ। आपको, आपकी देशभक्ति को, आपके डिसिप्लिन को, देश के लिए जीने-मरने के आपके जज्बों को, मैं आज नमन करने आया हूँ।

साथियों,

आज अगर भारत के वैश्विक प्रभाव को देखें तो वह आर्थिक, सांस्कृतिक और सैन्य हर स्तर पर मजबूत हो रहा है। आज विश्वभर में भारतीय मूल के लोगों का दबदबा बढ़ रहा है। भारत के युवा टैलेन्ट का भी विश्व में सम्मान दिनों-दिन बढ़ता ही चला जा रहा है और अगर देश की बात करें तो यहां सीमा के इस क्षेत्र में तो इन तीनों के दर्शन होते हैं। बीते कुछ वर्षों में जिस स्पीड और स्केल पर आपको सशक्त करने के फैसले लिए गए वो हमारी आर्थिक शक्ति को दिखाता है। आप सभी अलग-अलग राज्यों की परंपराएं, वहां की विविधता को समेटे हुए हैं। दुनिया की सबसे बड़ी सैन्य शक्ति में से एक का निर्माण करते हैं। हमारी सेना की ताकत ऐसी है कि जब भी कोई टेढ़ी नजर हमारी तरफ उठाता है तो उसको उसी भाषा में जवाब देने का जज्बा आप सब में होता है। ये वो बातें हैं जो भारत की सेना को दुनिया की नजरों में और ज्यादा विश्वसनीय बनाती हैं। आज भारत की सेनाएं दुनिया के बड़े-बड़े देशों के साथ साझा अभ्यास कर रही हैं। आतंक के खिलाफ हम रणनीतिक साझेदारियां कर रहे हैं। भारत की सेनाओं ने दिखाया है कि वो आतंक के ठिकानों पर कभी भी, कहीं भी स्ट्राइक कर सकती हैं। ये भी भारतीय सैन्य बल ही है जो दुनिया के हर कोने में पीसकीपिंग मिशन की अगुवाई करता है। भारतीय सेना जहां दुश्मनों को दहलाने में सक्षम है तो वहीं आपदाओं में दीपक की तरह खुद को प्रज्ज्वलित कर दूसरों के जीवन को भी रोशन कर देती है।

साथियों,

कोरोना से प्रभावित अपने नागरिकों को विदेशों से सुरक्षित वापस लाने में एयरफोर्स और हमारी नौसेना की भूमिका बहुत प्रशंसनीय रही है। कोरोना संक्रमण के दौरान जब वुहान जाने की चुनौती थी और उसकी भयानकता की अभी तो शुरुआत थी और वुहान में जहां-वहां फंसे हमारे भारतीयों को निकालना था तो एयरफोर्स के लोग सबसे पहले आगे आए हैं। कुछ ऐसे देश भी थे जिन्होंने अपने लोगों को वुहान में उनके नसीब पर ही छोड़ दिया था लेकिन भारत ने न सिर्फ अपने हर नागरिक को वहां से निकाला बल्कि कई अन्य देशों की भी हमारे एयरफोर्स के जवानों ने मदद की। ऑपरेशन समुद्रसेतु के जरिए भी विदेशों, जहां हजारों भारतीय हमारी नौसेना के कारण सुरक्षित भारत लौट आए हैं। देश ही नहीं बल्कि मालद्वीप, मॉरिशियस, अफगानिस्तान से लेकर कुवैत, कांगो और साउथ सूडान सहित अनेक मित्र देशों की मदद में भी वायुसेना सबसे आगे रही है। वायुसेना के सहयोग से ही संकट के समय में सैकड़ों टन की राहत सामग्री जरूरतमंदों तक समय पर पहुंच पाई है।

साथियों,

कोरोना काल में आप सभी के इन प्रयासों की बहुत चर्चा तो नहीं हो पाई और इसलिए मैं आज विशेषतौर पर देश का ध्यान इस तरफ आकर्षित कर रहा हूं। डीआरडीओ हो, हमारी तीनों सेनाएं हों, बीएसएफ सहित हमारी तमाम पैरामिलिट्री फोर्स ने कोविड से जुड़े इक्विपमेंट से लेकर क्वारंटीन और इलाज तक में जिस तरह युद्ध स्तर पर काम किया, वो अभूतपूर्व है। जब शुरुआत में सैनिटाइजर और फेस मास्क से लेकर पीपीई तक की चुनौती थी तब देश की इन जरूरतों को पूरा करने का बीड़ा आप सबने उठाया। प्रोटेक्शन किट हो, वेंटिलेटर्स हों, मेडिकल ऑक्सीजन से जुड़ी सुविधाएं हों, अस्पताल हों, हर स्तर पर आप सभी ने अपना अहम योगदान दिया है। इतना ही नहीं जब देश के अनेक हिस्सों में भीषण चक्रवात आए तब भी आपने मुश्किल में फंसे नागरिकों की मदद की, उनको सहारा दिया है। आपके त्याग और तपस्या से जगमगाते आपके जीवन उसी से प्रेरणा लेते हुए आज हर भारतीय दीपावली के दीये रोशन करें और दीपावली के दीये रोशन करके आपका गौरवगान कर रहा है।

साथियों,

आप सभी ने मिलकर के ये भी निश्चित किया कि कोरोना संक्रमण हमारी ऑपरेशनल यूनिट्स को किसी भी हालत में प्रभावित न कर सके। आर्मी हो, नेवी हो, एयरफोर्स हो किसी ने भी अपनी तैयारियों को कोरोना के कारण न रुकने दिया, न थमने दिया। कोरोना काल में ही यहां जैसलमेर में भी और हमारे समुद्र में भी सैन्य अभ्यास निरंतर जारी रहे हैं। ऐसे समय में जब दुनिया के अनेक देश लगभग रुक गए हों उस समय इस तेजी से आगे बढ़ना इतना आसान नहीं है लेकिन आपने यह भी करके दिखाया है। कोरोना काल में ही आधुनिक अस्त्र-शस्त्र और साजो-सामान की डिलीवरी और इंडक्शन दोनों तेजी से हुए हैं। यही वो समय रहा जब 8 आधुनिक राफेल विमान देश के सुरक्षा कवच का हिस्सा बने। इसी कोरोना काल में तेजस की स्कवाइन ऑपरेशनलाइज हुई। अपाचे और चिनूक हेलीकॉप्टर की पूरी ताकत भी इसी दौरान हमें मिली। भारत में ही तैयार 2 आधुनिक पनडुब्बियां भी कोरोना काल में ही नौसेना को प्राप्त हुई हैं।

साथियों,

कोरोना काल में वैक्सीन बनाने का प्रयास कर रहे वैज्ञानिकों के साथ ही मिसाइलें बनाने वाले हमारे वैज्ञानिकों ने देश का ध्यान खींचा है। इस दौरान निरंतर खबरें आती रहीं कि आज इस मिसाइल का परीक्षण किया गया। आज उस मिसाइल की आधुनिक टेक्नोलॉजी डेवलप की गई। आप कल्पना कर सकते हैं कि बीते कुछ महीनों में ही देश की सामरिक ताकत कितनी ज्यादा बढ़ गई है। बीते दो महीने में ही देश में अनेकों मिसाइलों के सफलतापूर्वक टेस्ट हुए हैं। एक सेकंड में दो किलोमीटर की दूरी तय करने वाले हाइपरसोनिक डेमॉस्ट्रेटर व्हीकल के सफल परीक्षण ने भारत को दुनिया के तीन-चार प्रमुख

देशों की लिस्ट में भारत को आगे लाकर के खड़ा कर दिया है, भारत को शामिल कर दिया है। जल हो, थल हो, नव हो हर जगह से मार करने वाली लंबी और छोटी दूरी की अनेक मिसाइलों ने बीते दिनों भारत के आसमान में सुरक्षा की अभेद दीवार खड़ी कर दी है। इसी कोरोना काल में हमारे वैज्ञानिकों ने भारत को फायर पॉवर के मामले में दुनिया की श्रेष्ठ ताकतों में शामिल कर दिया है।

साथियों,

आधुनिक युद्ध साजो-सामान के साथ-साथ देश की सरहदों पर आधुनिक कनेक्टिविटी वाले मेगा इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट भी इसी दौरान पूरे किए गए हैं। आज अटल टनल लद्दाख की कनेक्टिविटी का बहुत बड़ा माध्यम बना है। हमारी उत्तरी और पश्चिमी सीमाओं पर दर्जनों पुल और लंबी-लंबी सड़कें भी इस दौरान ही पूरी तरह तैयार की गई हैं। जब पूरी दुनिया में हड़कंप मचा हो, हर कोई अपने जीवन को लेकर परेशान हो उस परिस्थिति में देश की सुरक्षा में निरंतर डटे रहे। कहां रहकर के काम करके आप लोगों ने देश का दिल फिर जीत लिया है।

साथियों,

आप सभी की यही प्रतिबद्धता देश को रक्षा, सुरक्षा के मामले में मजबूत कर रही है। आज देश में एक तरफ जहां आधुनिक टेक्नोलॉजी, आधुनिक साजो-सामान पर फोकस किया जा रहा है। वहीं डिफेंस रिफॉर्म पर भी उतनी ही गंभीरता से काम हो रहा है। रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के पीछे लक्ष्य यही है कि आधुनिक हथियारों और टेक्नोलॉजी के लिए विदेशों पर निर्भरता कम हो। इसी को देखते हुए हमारी तीनों सेनाओं ने मिलकर एक प्रशंसनीय फैसला लिया है। उन्होंने यह तय किया है कि अब सुरक्षा से जुड़े 100 से ज्यादा साजो-सामान को अब विदेश से नहीं हमारे देश में से ही उत्पादन किया जायेगा या उत्पादित हो रही चीजों को और अच्छा बनाया जायेगा और यहीं से लिया जायेगा। कोशिश यह भी है कि अभी तक जो पुर्जे आयात हो रहे थे वो भी देश में ही बनेंगे। हमारी सेनाओं की ये इच्छा शक्ति देश के अन्य लोगों को भी लोकल के लिए वोकल होने की प्रेरणा दे रही है।

साथियों,

भारत में हथियार बनाने वाली ज्यादा से ज्यादा कंपनियां आएँ इसके लिए रक्षा क्षेत्र में एफडीआई की लिमिट को भी बढ़ाकर 74 प्रतिशत किया गया है। भारत में जो कंपनियां आना चाहती हैं उनके लिए यहां बेहतर सुविधाएं मिले इसके लिए उत्तर प्रदेश और तमिलनाडु में दो बड़े डिफेंस कॉरिडोर पर भी तेजी से काम चल रहा है।

साथियों,

सेना के आधुनिकीकरण में और सैन्य के साजो-सामान की आत्मनिर्भरता में सबसे बड़ा रोड़ा पुराने समय की प्रक्रियाएं रही हैं। इन प्रक्रियाओं के सरलीकरण के लिए भी लगातार काम किया जा रहा है। हाल ही में कुछ और बड़े सुधार किए गए हैं। अब जैसे पहले ट्रायल और टेस्टिंग की प्रक्रिया बहुत जटिल थी। ये समय भी बहुत लगाती थीं। इससे रक्षा क्षेत्र में उपकरणों की इंडकेशन में बहुत देरी लगती थी। अब इसको एकदम सरल किया गया है। हमारी तीनों सेनाओं के बीच समन्वय और बढ़े, तेजी से फैसले हों इसके लिए चीफ ऑफ डिफेंस स्टॉफ की व्यवस्था हम सबके सामने है। इतने कम समय में ही देश ने इस नई व्यवस्था का महत्व अनुभव कर लिया है। इतने कम समय में इस नई व्यवस्था का मजबूत होना हमारी सेना, वायु सेना, नौसेना की प्रतिबद्धता के कारण ही संभव हो रहा है और इसलिए हमारी तीनों सेनाएं अभिनंदन की अधिकारी हैं। हमारी सेनाओं के सामूहिक संकल्प ने सीडीएस की सफलता तय कर दी है।

साथियों,

आप सभी से बेहतर ये कौन जान सकता है कि बॉर्डर एरिया की क्या चुनौतियां होती हैं, यहां कितनी मुश्किलें आती हैं। इन मुश्किलों के समाधान के लिए बॉर्डर एरिया डेवलपमेंट के साथ ही बॉर्डर एरिया में नौजवानों की विशेष ट्रेनिंग भी उतनी ही जरूरी है। 15 अगस्त को लाल किले से मैंने कहा भी था कि देश के 100 से ज्यादा सीमावर्ती जिलों में एनसीसी से युवाओं को जोड़ने के लिए विशेष अभियान चलाया जायेगा। सीमावर्ती और समुद्र से लगे इन क्षेत्रों में लगभग 1 लाख युवाओं को तैयार किया जा रहा है। इसमें खास बात यह है कि इन युवाओं को थल सेना, नौसेना और वायु सेना ट्रेड करेगी। यानि जहां सेना का बेस है वहां सेना ट्रेनिंग देगी, जहां वायु सेना का बेस है वहां वायु सेना और जहां नेवी का बेस है वहां नेवी ट्रेड करेगी।

साथियों,

इसमें भी बड़ी संख्या में गर्ल्स केडिट को ट्रेड करने का लक्ष्य रखा गया है। ये उन प्रयासों का हिस्सा है जिसमें देश की आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए बेटियों की भूमिका को विस्तार दिया जा रहा है। आज जिस प्रकार दूसरे क्षेत्रों में महिलाओं को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है उसी तरह हमारे सुरक्षा तंत्र में भी वूमन पावर की भूमिका को और व्यापक किया जा रहा है। आज वायु सेना और नौ सेना में महिलाओं को कॉम्बेट रोल दिए जा रहे हैं। मिलिट्री पुलिस में भी बेटियों की भर्ती की जा रही है। बीएसएफ तो उन अग्रणी संस्थाओं में है जहां बॉर्डर सिक्योरिटी में महिलाओं की भूमिका का लगातार विस्तार हुआ है। ऐसे ही अनेक प्रयास हमारे आत्मविश्वास को बढ़ाते हैं, देश के विश्वास को बढ़ाते हैं।

साथियों,

दीपावली पर आप सभी ने एक और बात नोट की होगी। जब हम दीया जलाते हैं तो अक्सर एक दीये से बाकी दीयों को भी रोशन करते हैं। एक ही द्वीप से चले दूसरा, जले द्वीप हजार आप भी एक दीये की तरह पूरे देश को रोशन करते हैं, उसे ऊर्जावान बनाते हैं। सीमा पर आप जैसे एक-एक सैनिक के शौर्य से देशवासियों में राष्ट्रभक्ति का जज्बा बुलंद होता है। आप से प्रेरणा लेकर हर देशवासी अपने-अपने तरीके से राष्ट्रहित के लिए आगे आ रहा है। कोई स्वच्छता के संकल्प से जुड़ रहा है, कोई भ्रष्टाचार के विरुद्ध मुहिम को आगे बढ़ा रहा है, कोई हर घर जल के मिशन में जुटा है, कोई टीबी मुक्त भारत के लिए काम कर रहा है, कोई कुपोषण के खिलाफ अभियान को शक्ति दे रहा है, कोई दूसरों को डिजिटल लेन-देन सीखा कर अपना दायित्व निभा रहा है।

साथियों,

अब तो आत्मनिर्भर भारत अभियान को देश के जन-जन ने अपना अभियान बना लिया है। वोकल फॉर लोकल आज हर भारतीय का मिशन बन चुका है। आज इंडिया फर्स्ट, इंडियन फर्स्ट का आत्मविश्वास चारों तरफ फैल रहा है। ये सब कुछ संभव हो पा रहा है तो उसके पीछे आपकी ताकत है, आप पर भरोसा है। जब देश का विश्वास बढ़ता है तो दुनिया उतनी ही तेजी से आगे भी देश को बढ़ती देखती है। आइए विश्वास के, आत्मविश्वास के इस संकल्प को सिद्ध करने के लिए हम सब आगे बढ़ें। दीपावली के इस पावन पर्व पर नए संकल्पों के साथ, नए जज्बे के साथ हम कंधे से कंधा मिलाकर, कदम से कदम मिला करके वन लाइफ वन मिशन के मूड में लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए परिश्रम की पराकाष्ठा करते हुए आइये, 130 करोड़ का देश हम सब मिलकर के चल पड़े और मां भारती को जिस रूप में सामर्थ्यवान, समृद्ध बनाना चाहते हैं हम उस सपने को पूरा करें इसी एक भावना के साथ आप मेरे साथ जुड़कर के बोलिए, भारत माता की... जय, भारत माता की...जय, भारत माता की...जय। फिर एक बार आप सबको दीपावली के पर्व की अनेक-अनेक शुभकामनाएं, धन्यवाद।

डीएस/एमजी/एएम/एसके

(रिलीज़ आईडी: 1672951) आगंतुक पटल : 262

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: Manipuri , English , Urdu , Marathi , Bengali , Assamese , Punjabi , Gujarati , Odia , Tamil , Telugu , Kannada , Malayalam